संतुलित सोच

डॉ. हरजिंदर सिंह
डॉ. दविंदर सिंह

संतुलित सोच

डॉ. हरजिंदर सिंह

सह–लेखक : डॉ. दविंदर सिंह

ओरेंज बुक्स पब्लिकेशन

नई दिल्ली

Santulit Soch

Dr. Harjinder Singh
Co-author : Dr. Davinder Singh

E-Mail: harjinder1469@gmail.com
davindrsingh93@gmail.com
Mob: 9968060466, 9958070081

ISBN: 978-93-6554-201-1
First Published: August, 2025

Typesetting: *Sainiartwork*

Publisher: OrangeBooks Publication
Civil Lines, New Delhi-110054

Supported by ***Aao Baniye Gursikh Pyara***

All rights reserved © Sikh Panth

Price: Rs. 250/-, USD 20/-, CAD 25/-

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत खुशी का विषय है कि मैं डॉ. हरजिंदर सिंह द्वारा रचित पुस्तक **संतुलित सोच** को प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक एक ऐसे चिंतनशील मन की अभिव्यक्ति है जो प्रगति, सत्य और समाज की भलाई के प्रति समर्पित है। अपने शब्दों के माध्यम से लेखक पाठकों को आत्ममंथन, प्रश्न करने और विकास की दिशा में सोचने के लिए आमंत्रित करते हैं– यह एक ऐसी यात्रा है जो विचारशील परिवर्तन की तीव्र इच्छा से ओत–प्रोत है। हमारी कामना है कि पुस्तक 'संतुलित सोच' सभी के विचारों को प्रेरित करे, संवादों को जन्म दे और बौद्धिक जगत में एक सार्थक योगदान दे।

– स. कुलदीप सिंह बग्गा

एमडी, सिमको

संदेश

जिस तेज रफ्तार और अक्सर ध्यान–भटकाने वाली दुनिया में हम आज जी रहे हैं, वहाँ 'आओ बनिए गुरसिख प्यारा' जैसे प्रयास न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि अत्यंत आवश्यक हैं। यह मंच निरंतर रूप से गुरबाणी की शाश्वत बुद्धिमत्ता और आधुनिक सिख चेतना के बीच एक सेतु का कार्य करता आया है। मैंने व्यक्तिगत रूप से इस शो के विकास और इसके दर्शकों पर पड़े गहरे प्रभाव को करीब से अनुभव किया है। यह देखकर न केवल हर्ष होता है, बल्कि बौद्धिक संतोष भी मिलता है कि यह पहल अब विचारोत्तेजक पुस्तकों की एक श्रृंखला का रूप ले चुकी है। डॉ. हरजिंदर सिंह का साहित्यिक योगदान आध्यात्मिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिक चेतना और समकालीन संदर्भों का एक सुंदर संगम प्रस्तुत करता है। उनकी आगामी रचना **संतुलित सोच** उनके गुरमत–प्रेरित बौद्धिक समर्पण का एक और प्रमाण है।

यह पुस्तक 'आओ बनिए गुरसिख प्यारा' कार्यक्रम की तरह जानकारी से अधिक आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करती है। यह हमें सिर्फ गुरु साहिबान की विरासत की सराहना तक सीमित नहीं रखती, बल्कि हमें उनकी शिक्षाओं को अपने घरों में, अपने संवादों में और अपने दैनिक आचरण में आत्मसात करने की प्रेरणा देती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'संतुलित सोच' साधकों, विद्वानों और अध्यात्म के प्रेमियों के लिए एक मूल्यवान संसाधन सिद्ध होगी। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह रचना दुनियाभर में मस्तिष्क को प्रकाशित करे और हृदयों को प्रेरित करती रहे। **– स. गजिंदर सिंह, न्यूयॉर्क, अमेरिका**

भूमिका

सबसे पहले, 'आओ बनिए गुरसिख प्यारा' कार्यक्रम के उद्देश्य और दृष्टिकोण को स्पष्ट करना अत्यावश्यक है, क्योंकि किसी भी कार्य का लक्ष्य यदि स्पष्ट न हो, तो वह कार्य पूरा होकर भी अधूरा रह जाता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है– गुरबाणी और सिख इतिहास को एक अनूठे अंदाज में जनसाधारण तक पहुँचाना और हर सिख को गुरु नानक साहिब के मिशन का प्रचारक बनाना। यह प्रचार कार्य विभिन्न माध्यमों से हो सकता है, जैसे कि इस कार्यक्रम के माध्यम से, सोशल मीडिया पर, व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा या लेखन कार्य के रूप में।

एक ओर जहाँ हम 'आओ बनिए गुरसिख प्यारा' कार्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, वहीं दूसरी ओर हमने इस यात्रा को साहित्यिक रूप भी दिया है। वर्ष 2022 में **21वीं सदीः नवी सोच**, 2023 में इस कार्यक्रम पर आधारित पुस्तक **आगाहा कू त्राघि**, 2024 में **ज्ञान दा सागर** एवं *Progressive Thoughts* प्रकाशित की गई। संगत से प्राप्त उत्साहजनक प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर, हमने चौथी पुस्तक हिंदी भाषा में **संतुलित सोच** के नाम से प्रकाशित करने का निर्णय लिया। पहली पुस्तकों की तरह ही यह पुस्तक भी कार्यक्रम में साझा किए गए विचारों को सुव्यवस्थित और परिष्कृत कर आकार में लाई गई है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक सभी उम्र और पृष्ठभूमियों के पाठकों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी, क्योंकि इसमें विचारोत्तेजक चिंतन के साथ–साथ गुरबाणी के सुंदर अंश, सुरुचिपूर्ण लेखन और दृश्यात्मक प्रस्तुतियाँ भी सम्मिलित हैं। गुरमत से प्राप्त ज्ञान के आलोक में, मैं यह पुस्तक पाठकों को समर्पित कर रहा हूँ।

– डॉ. हरजिंदर सिंह

समर्पण और आभार

मैं इस पुस्तक को अपने आदरणीय पिता, सरदार लहणा सिंह जी और अपनी माता, कुलवंत कौर जी की स्मृति को समर्पित करता हूँ, जिनकी मार्गदर्शिता और स्नेहिल परवरिश ने बचपन से ही मुझे गुरबाणी के दिव्य मार्ग से जोड़ा।

मैं गहन कृतज्ञता के साथ अपने आदरणीय बड़े भाई, सरदार भुपिंदर सिंह जी और स्नेहमयी भाभी, बीबी गुरशरण कौर जी को हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ, जिनके आशीर्वाद और प्रोत्साहन ने मुझे सदैव संबल प्रदान किया।

मैं अपनी जीवन संगिनी, सरदारनी अमरजीत कौर, अपने पुत्रों– हरसिमरन सिंह और हरमन सिंह तथा अपनी बहुओं– गुलशीन कौर और हरलीन कौर का भी दिल से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मेरे साहित्यिक प्रयासों में निरंतर सहयोग और प्रेरणा दी।

मैं सरदार गुजिंदर सिंह जी (अमेरिका) और सरदार कुलदीप सिंह बग्गा (एमडी सिमको) की अमूल्य मित्रता को सादर स्वीकार करता हूँ, और 'आओ बनिए गुरसिख प्यारा' की समर्पित टीम के प्रति हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करता हूँ, जिनके सामूहिक प्रयासों और दृढ़ सहयोग से यह प्रयास साकार रूप ले सका।

अनुक्रमणिका

1. फैशन और धार्मिक आस्था 9
2. गुरबाणी का शुद्ध उच्चारण 11
3. युवा पीढ़ी और सिख सिद्धांत 13
4. सिख धर्म में तर्क 15
5. अनावश्यक चमत्कारिक साखियाँ 17
6. सिख विरासत की संरक्षा 19
7. आध्यात्मिक जागरूकता की ओर एक पथ 21
8. गुरु नानक साहिब का नारी समानता हेतु क्रांतिकारी दृष्टिकोण 22
9. वर्तमान में जीने की सीख 23
10. सिख धर्म : 21वीं सदी का धर्म 24
11. अज्ञान से ज्ञान की ओर 26
12. आध्यात्मिक प्रकाश का शाश्वत स्रोत 27
13. गुरू साहिबानो की वास्तविक विरासत का बोध 29
14. मूल नानकशाही कैलेंडर की पुनर्स्थापना की आवश्यकता 31
15. आज के युवाओं के लिए आध्यात्मिकता को प्रासंगिक बनाना 33
16. श्रेष्ठ पद 35
17. जागरूकता के साथ आगे बढ़ें 36
18. ज्ञान को व्यवहार में उतारना आवश्यक है 37
19. सराहना के पात्र 38
20. करतारपुर साहिब की विचारधारा का प्रसार 39
21. खेड़ा (सच्चा आनंद) 40
22. गुरु से जुड़ाव 41
23. ईमानदारी से कमाओ और दूसरों से बाँटो 43
24. सच्ची समझ से ही आती है बुद्धिमत्ता 44
25. सफलता की आकांक्षा 45
26. अहंकार से मुक्ति 46
27. जीवन जीने की कला 47
28. विरोधों पर विजय 48
29. सभी शक्तियाँ एक ही के अधीन 49
30. आराधना (सेवा) करो तो केवल एक की 50

31.	परमात्मा सर्वव्यापक है	51
32.	गहरा संबंध	52
33.	चढ़दी कला (उच्चतम अवस्था) की ओर अग्रसर	53
34.	समझे बिना नाम जपना	54
35.	तुलना से कृतज्ञता की ओर	55
36.	रूढ़ियों की निरर्थकता	56
37.	शरीर और मन	58
38.	सिख शताब्दियों का उत्सव	59
39.	बाल जीवन, महान बलिदान	60
40.	समर्थ मनुष्य	61
41.	गुरु से मुँह मोड़ने का परिणाम केवल भटकाव है	62
42.	बिबेकी (विवेकी) सिख	63
43.	गहन समझ	64
44.	अंधविश्वासों से मुक्ति	65
45.	संयुक्त राष्ट्र और गुरु तेग बहादुर जी	66
46.	परंपराओं का अनुसरण	67
47.	उपदेशों के अनुसार जीवन जीने की आवश्यकता	68
48.	वर्तमान से भविष्य की ओर	69
49.	बुद्धिमानों की संगति में मतभेदों की समाप्ति	70
50.	व्यक्तित्व विकास	71
51.	एक आनंदमय और संतोषपूर्ण जीव...	72
52.	दुखों से मुक्ति	74
53.	अनुसंधान की आवश्यकता	75
54.	हमारी जिम्मेदारी	76
55.	ईश्वरीय लीला को पहचानना	77
	लेखक परिचय	

फैशन और धार्मिक आस्था

आज के समय में जब ग्लोबलाइजेशन और उपभोक्तावाद हमारी सांस्कृतिक परतों को प्रभावित कर रहे हैं, ऐसे में यह प्रश्न और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि क्या 'परंपरा और आधुनिकता', विशेष रूप से 'फैशन और धार्मिक आस्था' एक साथ चल सकते हैं? उत्तर है– हाँ, यदि हमारी दृष्टि दीर्घ और दृष्टिकोण संतुलित हो तो यह बिलकुल मुमकिन है। फैशन केवल बाहरी खूबसूरती नहीं, बल्कि आत्म–अभिव्यक्ति का एक सूक्ष्म रूप है। यह व्यक्ति की चेतना, सोच और संस्कृति का दृश्य प्रतिनिधित्व है। जब सिख पहचान जैसे केश, पगड़ी, कड़ा, और सच्चे स्वरूप को गर्व और गरिमा के साथ आधुनिक फैशन में स्थान मिलता है, तो यह केवल सौंदर्य का प्रसंग नहीं होता, बल्कि यह एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का संकेत होता है। हर्नाज़ कौर संधू ने जब मिस यूनिवर्स मंच पर पगड़ी पहनकर नारी–सशक्तिकरण और सिखी की गरिमा को एक साथ प्रस्तुत किया, या मनीत सिंह और वरिंदर सिंह जैसे फैशन इन्फ्लुएंसर्स ने पारंपरिक पहनावे को आधुनिक फैशन के साथ समन्वयित किया, तो उन्होंने दरअसल यह दिखाया कि 'आस्था' कोई संकुचित अवधारणा नहीं, बल्कि यह लचीलेपन और समावेश की शक्ति है।

गुरबाणी में **जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु।। जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 140) जैसे विचार यह संकेत करते हैं कि सच्चा धर्म आंतरिक शुद्धता और भावना से उपजता है, न कि केवल बाहरी क्रियाओं या रस्मों से। अगर मन निर्मल है, भावना सच्ची है, तो बाहरी अभिव्यक्तियाँ (जैसे सेवा, नमस्कार, पाठ आदि) उस

सच्चाई का विस्तार बन जाती हैं, उनका समर्थन करती हैं, ढोंग नहीं बनतीं। इस नजरिए से देखा जाए तो फैशन, यदि सजगता और श्रद्धा के साथ अपनाया जाए, तो यह सिख पहचान को मिटाता नहीं, बल्कि उसे वैष्विक स्तर पर सम्मान और नई समझ प्रदान करता है। असल में, यह समय की मांग है कि हम परंपरा को संग्रहालय की वस्तु न बनाएँ, बल्कि उसे आधुनिक जीवन के संदर्भों में जीवंत करें। यह तभी संभव है जब हम अपने धार्मिक प्रतीकों को डर या दबाव नहीं, बल्कि चेतन गौरव और रचनात्मकता के साथ धारण करें। जब कड़ा रॉलेक्स घड़ी के साथ पहना जाए, तो यह अतीत और वर्तमान एवं जड़ और चैतन्य के बीच विरोध नहीं बल्कि संवाद बनता है। इसलिए, सिख पहचान को संकोच से नहीं, साहस, विवेक और सौंदर्य–बोध के साथ अपनाइए। यह केवल व्यक्तिगत चयन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक योगदान है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बनेगा।

गुरबाणी का शुद्ध उच्चारण

कुछ पाठक सज्जन यह मानते हैं कि जहां गुरबाणी में बिंदी (नासल चिन्ह) न हो, वहां नासल उच्चारण नहीं किया जाना चाहिए। हमने उन सिख विद्वानों की राय और शोध को आधार बनाया है जिन्होंने गुरबाणी की गहराई से खोज और व्याख्या की है, और उसी आधार पर इस दुविधा की पुष्टि करने का प्रयास कर रहे हैं। इन विद्वानों का विचार है कि गुरबाणी में कई स्थानों पर बिंदी लगी होती है, लेकिन कई स्थानों पर नहीं, और यही स्थिति अदक (आधा शब्द) तथा पैर बिंदी के प्रयोग को लेकर भी है। हालांकि गुरबाणी में इन सभी चिन्हों का उपयोग सुसंगत रूप से नहीं हुआ, फिर भी विद्वानों का स्पष्ट विचार है कि जहां इनका प्रयोग नहीं हुआ, वहां भी यदि उच्चारण के लिए इनकी आवश्यकता हो, तो उन्हें अवश्य लगाना चाहिए, वरना शुद्ध उच्चारण और सही अर्थ संभव नहीं होगा। उदाहरण के तौर पर, हम एक प्रसिद्ध पंक्ति लेते हैं–

लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरू नदरि करेइ।। (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 44)

इसमें "लख" के साथ अदक (आधा शब्द) नहीं लगा हुआ, परन्तु यदि हम इसे "लख्ख" के रूप में अदक सहित उच्चारित करें, तो इसका भाव और अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। इसी तरह "पातशाहियाँ" शब्द में पैर बिंदी (नासल ध्वनि) नहीं दिखाई देती, लेकिन यदि हम इसे नासल उच्चारित न करें, तो इसका अर्थ अधूरा और भावहीन लगता है।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि यदि बिंदी, अदक और पैर बिंदी का प्रयोग सही ढंग से न किया जाए, तो गुरबाणी का सही अर्थ समझना मुश्किल हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सिर्फ पाठ न करें, बल्कि सूझबूझ से पढ़ें और आत्मसात करें। गुरबाणी का उच्चारण और अर्थ केवल शब्दों का वाक्य नहीं, बल्कि यह एक आध्यात्मिक अनुभव है, जिसे सही ढंग से जीने और समझने के लिए व्याकरणिक चिन्हों का सही प्रयोग करना बेहद जरूरी है।

युवा पीढ़ी और सिख सिद्धांत

एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न अक्सर उठाया जाता है कि आज के युवाओं को सिख सिद्धांतों के साथ कैसे जोड़ा जाए? देखिए आज की युवा पीढ़ी अत्यधिक आधुनिक विचारों और टेक्नालजी से भरी हुई है, उनको सिख सिधांतों के साथ जोड़ने के लिए किसी पुराने तरीके की जगह आज की तकनीक और माध्यम का सकारात्मक रूप से प्रयोग करना होगा। गुरबाणी को केवल ग्रंथों तक सीमित रखने के बजाय, उसे जीवन से जोड़कर पेश करना आवश्यक है। इसके लिए हमें सच्चाई पर आधारित और यथार्थवादी कहानियाँ (कथाओं) को अपनाना होगा। सिख इतिहास की साखियों को इस ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि वे युवाओं के दिलों को छू सकें और उन्हें प्रेरित कर सकें। इन कहानियों को स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, और कार्यशालाओं में होते अनुभवात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए, ताकि युवा केवल ज्ञान न लें, बल्कि उन्हें गहराई से महसूस करें।

आज के समय में डिजिटल और क्रिएटिव मीडिया की ताकत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हमें सोशल मिडिया, यूट्यूब, एनीमेशन और अन्य आधुनिक डिजिटल साधनों के जरिये गुरबाणी और सिख शिक्षाओं को इस तरह प्रस्तुत करना चाहिए कि लोग न सिर्फ ज्ञानवर्धक हों, बल्कि देखने वाले के मन को भी आकर्षित करें। गुरबाणी का संदेश यदि उनकी भाषा और शैली में पहुंचाया जाए, तो युवा सहजता से उससे जुड़ पाएंगे। साथ ही, गुरूद्वारों को केवल प्रवचन स्थलों तक सीमित न रखकर उन्हें संवादात्मक और खुली सोच के स्थानों में बदलना होगा। जहां युवा अपने

प्रश्न रख सकें, अपनी जिज्ञासाओं के उत्तर पा सकें और बिना किसी झिझक के गुरबाणी से जुड़ सकें। जब हम उनके सवालों को गंभीरता से सुनते हैं और सम्मानपूर्वक उत्तर देते हैं, तब वे अपने धर्म से आत्मीय रिश्ता महसूस करते हैं। गुरमुखी भाषा के साथ–साथ सरल और अर्थपूर्ण अनुवादों की भी जरूरत है, ताकि गुरबाणी की शिक्षाएं युवाओं के जीवन से सीधा संवाद कर सकें। इन शिक्षाओं को उनके जीवन के अनुभवों से जोड़कर इस तरह प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि वे उन्हें अपनी समस्याओं का समाधान और आध्यात्मिक प्रेरणा समझ सकें।

अंततः कहा जा सकता है कि युवाओं को सिख सिद्धांतों से जोड़ने के लिए हमें एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जो आधुनिक, संवादपूर्ण और अर्थगर्भित हो, जहां परंपरा और नवाचार का सुंदर संतुलन हो। हमें आशा है कि इन विचारों से प्रश्न का संतोषजनक उत्तर मिला होगा और यह संवाद कई और लोगों को भी प्रेरित करेगा।

सिख धर्म में तर्क

सिख धर्म में तर्क की अनुमति है या नहीं। इस सवाल का उत्तर हमें स्वयं श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के प्रारंभिक शबदों, विशेषकर 'जपुजी साहिब' से मिल जाता है। 'जपजी साहिब' में ही गुरू नानक साहिब ने उस समय प्रचलित कई धारणाओं, रीतियों और अंधविष्वासों पर सीधा प्रश्न उठाया है। उदाहरणस्वरूप, गुरू साहिब कहते हैं **सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 1) अर्थात लाखों बार सोचने और विचार करने से परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। उस समय लोग समझते थे कि माथे पर तिलक लगा लेना या नदियों में स्नान करना आत्मिक शुद्धि का साधन है, लेकिन गुरू साहिब ने साफ कहा कि इससे कोई आध्यात्मिक उन्नति नहीं होती। इसी तरह, लोगों का मानना था कि भूखा रहकर, शरीर को कष्ट देकर या मौन धारण करके ईश्वर की कृपा प्राप्त की जा सकती है, पर गुरू साहिब ने स्पष्ट किया कि आत्मा की उन्नति के लिए यह मार्ग उपयुक्त नहीं हैं। वे कहते हैं कि केवल चुप रहना या सांस रोक लेना ही समाधान नहीं है, बल्कि संवाद करना, ज्ञान बांटना, तर्क करना, समझना और समझाना यही वास्तविक साधना है।

गुरू साहिब ने तर्क को हमेशा प्रोत्साहित किया है, क्योंकि वे मानते हैं कि अंधविश्वास से दूर रहना और विवेक से चलना ही सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक जागृति की ओर ले जाता है। गुरू ग्रंथ साहिब केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक और जीवन के उच्चतम सिद्धांतों का प्रकाशस्तंभ है। इसमें केवल गुरू साहिबान की ही नहीं, बल्कि संत कबीर, भगत रविदास और अन्य भक्तों की बाणी भी दर्ज है, जिन्होंने बार–बार तर्क, अनुभव और ज्ञान की बात की है।

इसलिए यदि कोई कहे कि सिख धर्म में तर्क की जगह नहीं है, तो यह पूरी तरह अनुचित है। सिखी अंधभक्ति नहीं सिखाती, बल्कि ज्ञान पर आधारित श्रद्धा और जागरूकता का मार्ग दिखाती है। तर्क का अर्थ यहां नकारात्मक आलोचना नहीं, बल्कि सूझ–बूझ से सत्य की खोज है। गुरू साहिब हमें सिखाते हैं कि जीवन में जो "कूड़ (झूठ) की दीवार" है, वह केवल उसी समय गिर सकती है जब हम प्रभु के हुकम के अनुसार चलें, सम्पूर्ण सृष्टि के भले का विचार करें, अथवा ज्ञान और प्रेम के साथ जुड़ें। यही मार्ग हमें उस परम सत्य की ओर ले जाता है, जिसे गुरू साहिब ने **हुकमि रजाई चलणा...**।। (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 1) कहा है। अंततः सिख धर्म तर्क, विचार और विवेक को नकारता नहीं, बल्कि उन्हें आत्मिक उन्नति का मूल स्तंभ मानता है।

अनावश्यक चमत्कारिक साखियाँ

21वीं सदी के विवेकशील और विज्ञानिक युग में सिख इतिहास से संबंधित जो चमत्कारी सखियाँ (कहानियाँ) सुनाई जाती हैं उनमें सच्चाई की कमी होने के कारण नई पीढ़ी ने सिख धर्म पर किन्तु–परन्तु करना शुरू कर दिया है। दरअसल, सिख इतिहास में कई ऐसी कथाएँ जोड़ दी गईं हैं जो आज के तार्किक मापदंडों पर खरी नहीं उतरतीं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन कथाओं को अक्सर गुरूद्वारों में स्टेजों से प्रचारित किया जाता है। हमें यह विचार करना चाहिए कि क्या इन चमत्कारी कथाओं का प्रचार सिख धर्म की वास्तविक सिद्धांतों के अनुरूप है। गुरबाणी तो हमें ब्रह्मांडीय नियमों को समझने और **हुकमि रजाई चलणा...।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 1) यानि ईश्वर की इच्छा में चलने का मार्ग दिखाती है।

जो चमत्कारी कहानियाँ प्रचारित की जाती हैं, उनका मूल कई बार उन लेखकों की विचारधारा होती है जो सिख इतिहास को भी पौराणिकता की रंगत देना चाहते थे। उनकी मंशा यह नहीं थी कि धर्म 'विवेक और ज्ञान' से जुड़े, बल्कि वे उसे अंधविश्वास की दिशा में मोड़ना चाहते थे। इसलिए हमें सजग और विवेकी होकर, इन कहानियों को गुरबाणी के प्रकाश में परखने की आवश्यकता है। यदि कोई कथा 'गुरबाणी' के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, तो उसे बिना संकोच अस्वीकार कर देना चाहिए। सिख युवाओं को, विशेषकर पढ़े–लिखे विद्यार्थियों को, जो आज के वैश्विक संदर्भ में सिख धर्म का प्रचार कर रहे हैं, केवल वही इतिहास प्रस्तुत करना चाहिए जो प्रामाणिक, तर्कसंगत और गुरबाणी के मूल विचारों

से जुड़ा हो। उन्हें यह समझने की आवश्यकता है कि गुरबाणी ही वह प्रकाश है जिसमें सत्य और असत्य की पहचान की जा सकती है।

आज हमें डॉ. हरजिंदर सिंह दिलगीर, डॉ. करमिन्द्र सिंह ढिलों (मलेशिया), सरदार इंदर सिंह घग्गा जैसे विद्वानों की शोध पर आधारित इतिहास को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है या यूट्यूब के माध्यम से जो विचार साझा किए हैं, वे सिख इतिहास और सिद्धांतों के प्रति जिम्मेदार, तथ्यपरक और ईमानदार दृष्टिकोण रखते हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि हम सिख धर्म की वास्तविक शिक्षाओं को समझें, गुरबाणी को केंद्र में रखें और अंधविश्वास से मुक्त होकर केवल उस इतिहास का प्रचार करें जो विवेक, विचार और प्रमाण पर आधारित हो। यही आज के समय की माँग भी है और यही सिखी की गरिमा के अनुरूप भी है।

सिख विरासत की संरक्षा

सिख धर्म का गौरवशाली इतिहास ऐसे असंख्य बलिदानों पर आधारित है जिन्होंने अकल्पनीय यातनाएँ सहीं, परंतु अपने विश्वास से कभी विचलित नहीं हुए। किसी को जलते हुए तवे पर बैठाया गया, किसी को शहीद कर दिया गया, किसी को जिंदा दीवार में चिनवा दिया गया, किसी के अंग–अंग को काटा गया, और किसी के सिर की खाल तक उतारी गई। इन अत्याचारों के बावजूद एक सिद्धांत अटल रहा– किसी ने भी अपने धर्म से मुँह नहीं मोड़ा। किन्तु आज, 21वीं सदी में, हम एक गंभीर चुनौती– धार्मिक परिवर्तन का सामना कर रहे हैं। यह आत्ममंथन का समय है– हमें सोचना होगा कि सिख परिवार अपनी जड़ों से क्यों दूर हो रहे हैं? ऐसा क्या बदला है? हमारी चूक कहाँ हुई है? यदि हम आज इस संकट का समाधान नहीं खोज पाए, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें क्षमा नहीं करेंगी।

इस समस्या के पीछे तीन मुख्य कारण हैं: पहला, हमें स्वीकार करना होगा कि सच्ची आध्यात्मिकता जातिवाद से परे होती है। दुर्भाग्यवश, हमारे समाज में जातीय भेदभाव आज भी मौजूद हैं, जो उस सिख विचारधारा को कमजोर करते हैं जो समानता और एकता पर आधारित है। दूसरा, हमें अपनी संसाधनों के उपयोग पर पुनर्विचार करना चाहिए। हमारे कई सिख संस्थान अपनी ऊर्जा और धनभंडार भव्य आयोजनों जैसे विशाल लंगर या नगर कीर्तन पर खर्च करते हैं। इन परंपराओं का अपना महत्त्व है, परंतु इनकी भव्यता उद्देश्य को पीछे न छोड़ दे। हमें अपने संसाधनों को शिक्षा, सामाजिक सेवा और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मोड़ना चाहिए। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण, हमें अपने परिवारों

को गुरबाणी की अनमोल शिक्षाओं से फिर से जोड़ना होगा। गुरू ग्रंथ साहिब जी की बाणी केवल पढ़ने के लिए नहीं, जीवन में उतारने के लिए है।

इस संकट का समाधान हमारे अंदर है। हमें स्वयं उदाहरण बनकर जीना होगा, सिख सिद्धांतों के अनुसार जीवन बिताना होगा, और अपने बच्चों को इस महान विरासत की गहराई से परिचित कराना होगा। यदि हम आज बुद्धिमत्ता और संकल्प के साथ कार्य करें, तो हम अपनी विरासत को बचा सकते हैं और सिख धर्म की लौ को आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रज्वलित रख सकते हैं। चुनाव हमारा है या तो हम उठ खड़े होकर अपनी पहचान की रक्षा करें, या फिर इतिहास हमारी उपेक्षा के लिए हमें उत्तरदायी ठहराए।

आध्यात्मिक जागरूकता की ओर एक पथ

गुरू नानक साहिब जी का दिव्य संदेश समय की सीमाओं से परे है और सच्ची आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा है। उन्होंने निर्भयता, आत्मानंद और ईश्वर–प्रेम का मार्ग दिखाया, जिससे जीव दुनियावी चिंता से मुक्ति की ओर अग्रसर हो सके। उन्होंने सिखाया कि सच्ची संपत्ति भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि संतोष, धैर्य और कृतज्ञता में निहित है– यही व्यक्ति को इच्छा और पराधीनता के चक्र से मुक्त करता है। उन्होंने पाखंड और निरर्थक कर्मकांड की बेड़ियाँ तोड़कर साधकों को आत्म–चिंतन, ज्ञान और ईश्वर से गहरे संबंध की ओर प्रेरित किया। गुरू नानक साहिब ने चमत्कारों और अंधविश्वासों को मोक्ष का साधन मानने से इंकार किया और ईश्वर की रजा (हुक्म) में पूर्ण समर्पण पर बल दिया, जहाँ सच्चा आनंद और शांति प्राप्त होती है।

उन्होंने आत्म–जवाबदेही और सीधे प्रभु–भक्ति का सिद्धांत दिया कि व्यक्ति को मध्यस्थों पर नहीं, बल्कि स्वयं की प्रार्थना पर भरोसा रखना चाहिए। उनका यह अमूल्य विचार आज भी प्रतिध्वनित होता है: **आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 474) अर्थात आध्यात्मिक यात्रा का उत्तरदायित्व स्वयं उठाना होगा। यह आध्यात्मिकता किसी धर्म या क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक मार्ग है। यह जीवन को सत्य, प्रेम, विनम्रता और सेवा के साथ जीने का संदेश देता है। आइए, हम गुरू नानक साहिब की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाएँ और इस प्रकाश को संसार भर में फैलाएँ, क्योंकि यही ज्ञान हमें आत्मिक उन्नति और मोक्ष की दिशा में ले जा सकता है।

गुरू नानक साहिब का नारी समानता हेतु क्रांतिकारी दृष्टिकोण

गुरू नानक साहिब केवल एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक नहीं, बल्कि एक ऐसे समय में जब समाज पूरी तरह पुरुष प्रधान था; में नारी समानता के एक क्रांतिकारी समर्थक भी थे। उस समय महिलाओं को हीन समझा जाता था, और यह धारणा थी कि उन्हें मुक्ति केवल पुरुष के रूप में पुनर्जन्म लेने पर ही मिल सकती है। गुरू नानक साहिब ने इस सोच को खुलकर चुनौती दी। उनका वाक्य **'सो किउ मंदा आखीऐ जितु जमहि राजान।।'** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 473) केवल एक काव्यात्मक पंक्ति नहीं, बल्कि नारी गरिमा और सम्मान की घोषणात्मक उद्घोषणा थी। उन्होंने महिलाओं को संगत और सेवा में सक्रिय रूप से शामिल किया, जिससे वे आध्यात्मिक और सामाजिक नेतृत्व में भागीदार बन सकें। उनके अनुसार, ईश्वर की प्राप्ति किसी के लिंग (Gender) पर निर्भर नहीं, बल्कि आस्था और सच्चाई पर निर्भर है।

उनकी विरासत को आगे बढ़ाते हुए, सिख गुरूओं ने लंगर प्रणाली जैसी परंपराओं के माध्यम से समानता को संस्थागत रूप दिया, जहाँ स्त्री और पुरुष एकसाथ बैठकर लंगर छकते हैं। आज भी, जब समाज में नारी भेदभाव विभिन्न रूपों में मौजूद है, गुरू नानक साहिब का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। हमें इस विचार को आधुनिक माध्यमों– सोशल मीडिया, डिजिटल सामग्री, शैक्षणिक चर्चाओं और सामुदायिक संवादों के जरिए व्यापक स्तर पर पहुँचाना होगा, ताकि हम एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की ओर अग्रसर हो सकें, जिसे गुरू नानक साहिब ने पांच शताब्दियों पूर्व देखा था।

वर्तमान में जीने की सीख

गुरू ग्रंथ साहिब की बाणी का केंद्रीय संदेश है– 'अभी और यहीं' अर्थात् वर्तमान क्षण में जागरूकता और उत्तरदायित्व के साथ जीना। गुरबाणी सिखाती है कि व्यक्ति को अपने वर्तमान जीवन को समझना, निखारना और अपनाना चाहिए, भूतकाल या भविष्य के जन्मों में उलझना आत्मिक विकास में बाधा बनता है। शबद हैः **'सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह।।'** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 20) यह क्षण ही प्रभु मिलन का सबसे उपयुक्त समय है। गुरू साहिब स्पष्ट करते हैं कि मोक्ष, सुख और आत्म–विकास स्वयं के कर्मों, गुणों और सत्यनिष्ठा पर आधारित होते हैं, ना कि पूर्व जन्मों के कर्मों या भाग्य पर। दुर्भाग्य से आज भी कुछ प्रचारक, लेखक और विद्वान गुरबाणी की व्याख्या पुराने मिथकों जैसे चित्रगुप्त, भाग्य, भविष्य जन्म के आधार पर करते हैं, जिससे आत्म–जागरूकता और आत्म–विकास से ध्यान भटकता है।

गुरबाणी हमें भूतकाल में उलझने या भविष्य की चिंता करने के बजाय वर्तमान में जीने और जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने का संदेश देती है। यदि हम गुरबाणी को वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें, तो स्पष्ट होता हैः **'मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।।'** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 441) सच्चा सुख हमारे भीतर है, बाहर नहीं। आज आवश्यकता है कि हम धार्मिक रूढ़ियों से ऊपर उठकर गुरबाणी को उसके सच्चे अर्थों में समझें और उसे अपने जीवन में लागू करें। तभी हम गुरू साहिब की बाणी के वास्तविक संदेश को आत्मसात कर सकते हैं।

सिख धर्म : 21वीं सदी का धर्म

सिख धर्म एक वैज्ञानिक और आधुनिक विचारधारा वाला धर्म है, जो अपनी तीन मूलभूत विशेषताओं के कारण अन्य धर्मों से अलग और 21वीं सदी के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। पहली महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अंधविश्वासों को पूरी तरह नकारता है। गुरबाणी व्यक्ति को अंधविश्वास, अज्ञानता या निराधार रीति–रिवाजों की जगह तर्क, विवेक और ज्ञान के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है। आज के वैज्ञानिक और शिक्षा प्रधान युग में हम मिथकों, अंधविश्वासों या पुराने रूढ़िवादी विश्वासों पर निर्भर नहीं रह सकते। दूसरी विशेषता यह है कि सिख धर्म प्रकृति और पर्यावरण के प्रति प्रेम और संरक्षण की भावना को महत्व देता है। गुरू ग्रंथ साहिब में लिखा हैः **'बलिहारी कुदरति वसिआ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ।।'** (प्रकृति में ही सृष्टिकर्ता का वास है, और वह असीम है– श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 469)। यह पंक्ति इस बात को स्पष्ट करती है कि प्रकृति जीवन के लिए अनिवार्य है और इसका सम्मान तथा संरक्षण आवश्यक है। आज के समय में जब ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण विनाश जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं, तब सिख धर्म की यह शिक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। तीसरी विशेषता यह है कि सिख धर्म नए विचारों और प्रगतिशील विकास के साथ सदा समरस रहता है। गुरबाणी के सिद्धांत कभी भी विज्ञान या आधुनिक आविष्कारों के विरुद्ध नहीं जाते, बल्कि आत्म–चिंतन, आध्यात्मिक उन्नति और तर्कपूर्ण जीवन शैली को प्रोत्साहित करते हैं। कोई भी वैज्ञानिक खोज या तकनीकी विकास गुरबाणी की मूल शिक्षाओं के विपरीत नहीं हो सकता।

इसीलिए सिख धर्म एक प्रगतिशील, भविष्यदर्शी और सार्वभौमिक रूप से प्रासंगिक जीवन–पद्धति है। इसी कारण सिख धर्म मात्र एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक पूर्ण जीवन–दर्शन है, जो मानवाधिकारों, स्वतंत्रता और समानता की वकालत करता है। यह स्त्री–पुरुष समानता, शिक्षा और श्रमिक वर्ग के अधिकारों का भी समर्थन करता है, जिससे इसकी शिक्षाएं हर पीढ़ी के लिए प्रभावशाली और प्रेरणास्पद बनी रहती हैं। आज यह आवश्यक है कि हम गुरबाणी की सच्ची शिक्षाओं को समकालीन भाषा में प्रस्तुत करें, ताकि विश्व समाज सिख धर्म की वैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रासंगिकता को सही रूप में समझ सके।

अज्ञान से ज्ञान की ओर

गुरबाणी में मायका और ससुराल की अवधारणाएं गहन आध्यात्मिक रूपकों के रूप में प्रस्तुत की गई हैं, जो आत्मिक विकास के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। पेके घर उस अवस्था का प्रतीक है जिसमें जीव अज्ञान, ममता और स्वार्थ की जकड़ में फंसा रहता है। इस स्थिति में व्यक्ति संसार को अपनी दृष्टि से "मेरा", "मेरी उपलब्धियाँ", "मेरे संबंध" के भाव से देखता है। अहंकार और माया की यह विचारधारा उसे परमात्मा और समस्त सृष्टि से अलग कर देती है। इस मोह और ममता के कारण व्यक्ति इच्छाओं और अपेक्षाओं में उलझा रहता है, जो अंततः पीड़ा और दुख का कारण बनती हैं। इसके विपरीत, ससुराल घर उस चेतन अवस्था का प्रतीक है जहाँ आत्मा गुरू की कृपा और ज्ञान के प्रकाश से दिव्यता को पहचानती है। यह घर आत्मिक जागरूकता, विनम्रता और प्रभु की वास्तविक पहचान का प्रतीक है। जब व्यक्ति गुरू की संगति में आता है, तो उसे बोध होता है कि संसार की हर वस्तु क्षणभंगुर है और सब कुछ परमात्मा का ही है। इस चेतना में रहते हुए जीव स्वयं को समस्त सृष्टि से जुड़ा हुआ अनुभव करता है यह जुड़ाव सेवा, प्रेम और नम्रता को जन्म देता है। गुरबाणी में यह रूपांतरण केवल दृष्टिकोण का परिवर्तन नहीं, बल्कि संपूर्ण आध्यात्मिक पुनर्जन्म है जहाँ स्वार्थ में लिप्त जीवन, सेवा–भाव में बदल जाता है; मोह, वैराग्य में रूपांतरित हो जाता है; और अज्ञान, पूर्ण आत्मबोध में परिवर्तित हो जाता है। अंततः गुरबाणी हमें सिखाती है कि सच्चा मोक्ष मायके की अहं–प्रधान स्थिति से ससुराल की ईश्वर–चेतना की ओर यात्रा में निहित है जहाँ प्रेम, एकता और सर्वकल्याण ही जीवन के मूल सिद्धांत बन जाते हैं। यही है अज्ञान से ज्ञान की ओर चलने वाला पवित्र मार्ग, जिसे गुरमत अपनाने की प्रेरणा देती है।

आध्यात्मिक प्रकाश का शाश्वत स्रोत

गुरबाणी में पवन (वायु) और पानी (जल) को जीवन के लिए अनिवार्य तत्व बताया गया है, किंतु इन्हें गुरू नहीं माना गया। श्री गुरू ग्रंथ साहिब स्पष्ट रूप से कहते है कि "शबद" ही सच्चा गुरू है, और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग भी उसी के माध्यम से संभव है। जैसे शरीर के लिए वायु और जल आवश्यक हैं, उसी प्रकार आत्मा के पोषण के लिए ज्ञान और शबद की आवश्यकता होती है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में कहा गया है: **'सबदु गुरू सुरति धुनि चेला।।'** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 943) अर्थात शबद गुरू है और चेतना उसका शिष्य। यह पंक्ति यह स्पष्ट करती है कि शबद वह प्रकाश है जो अंधकार से ज्ञान की ओर ले जाता है। कई लोग वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी जैसे प्राकृतिक तत्वों को पूजनीय मानते हैं और उन्हें दिव्य शक्ति समझते हैं, परंतु गुरमत ऐसी किसी मान्यता का समर्थन नहीं करता। गुरू नानक साहिब जी ने कहा: **तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 103) यहाँ "तूं" परमात्मा की ओर संकेत करता है, न कि किसी भौतिक तत्व की ओर।

गुरबाणी में यह बात बार–बार दोहराई गई है कि शरीर के जीवन के लिए जैसे वायु और जल आवश्यक हैं, वैसे ही आत्मा के लिए शबद और गुरू का ज्ञान अपरिहार्य हैं। गुरबाणी में लिखा है: **बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ।।** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 591) एवं **'बाझु गुरू डुबा संसारु।।'** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 138), भाव सच्चे गुरू की सेवा के बिना

यह संसार आत्मिक रूप से मृत है, और गुरू की रहनुमाई के बिना मानवता अज्ञान में डूबी हुई रहती है। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि गुरू कोई प्राकृतिक तत्व या शक्ति नहीं है, बल्कि गुरू वह शाश्वत ज्ञान है जो सच्चा सुख और आत्मिक प्रकाश प्रदान करता है। गुरबाणी हमें यह सिखाती है कि जिस प्रकार हम शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार आत्मा की शुद्धता और उन्नति के लिए भी जागरूक होना आवश्यक है। शब्द ही वह अमृत है जो आत्मा को जीवन देता है और परम सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है।

गुरू साहिबानों की वास्तविक विरासत का बोध

यह स्पष्ट है कि गुरू नानक साहिब से लेकर गुरू गोबिंद सिंह जी तक की इतिहासिक घटनाओं में कई चमत्कारिक कथाएँ जोड़ दी गई हैं, जिनका गुरमत के मूल सिद्धांतों से कोई संबंध नहीं है। इन कथाओं को ऐसे लेखकों द्वारा लिखा गया, जिन्हें गुरबाणी और गुरू साहिबानों की शिक्षाओं की गहराई की समझ नहीं थी। गुरमत के अनुसार, गुरू साहिब हमेशा हमें "हुकमि रजाई चलणा" अर्थात परमात्मा की इच्छा में चलने और उसकी आज्ञा को स्वीकार करने की शिक्षा देते हैं, न कि चमत्कारों और अलौकिक शक्तियों पर निर्भर रहने की। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पूर्व 1469 की कुछ परंपराओं को सिख इतिहास में मिला दिया गया, जिससे गुरमत की मौलिक शिक्षाएं पृष्ठभूमि में धकेल दी गईं।

गुरू साहिबानों का सबसे बड़ा "चमत्कार" उनकी आध्यात्मिक विरासत, उनका अथक परिश्रम और सत्य के प्रसार हेतु समर्पण था। गुरू नानक साहिब ने उस समय के कठिन हालातों में लगभग 23,000 मील की यात्रा बिना किसी आधुनिक यात्रा सुविधा, पासपोर्ट या संसाधन के की। यह किसी भी धार्मिक आगू द्वारा की गई सबसे लंबी आध्यात्मिक यात्राओं में से एक मानी जाती है, जिसके माध्यम से उन्होंने गुरमत का सन्देश पूरे विश्व में फैलाया। लेकिन सिख इतिहास का सबसे महान "चमत्कार" गुरू ग्रंथ साहिब का संकलन और प्रकाश है। गुरू गोबिंद सिंह जी ने यह सुनिश्चित किया कि

यह दिव्य ज्ञान शाश्वत, शुद्ध और अपरिवर्तनीय रूप में युगों तक मानवता का मार्गदर्शन करता रहे। दुर्भाग्यवश, आज हम इस असली आध्यात्मिक विरासत को समझने की बजाय चमत्कारों और मनघड़त कहानियों में उलझ गए हैं। ऐसी झूठी कथाएँ हमारी धार्मिक पहचान को न केवल विकृत करती हैं, बल्कि गुरू साहिबानों की असल शिक्षाओं को भी धुंधला कर देती हैं। आज आवश्यकता है कि हम गुरबाणी की गहराई को समझें, गुरू ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें, और अंधविश्वास तथा झूठी परंपराओं की बजाय सच्चे ज्ञान और विवेक को अपनाएँ। यही असली श्रद्धा है, और यही गुरू साहिबानों की सच्ची विरासत को संभालने का मार्ग है।

मूल नानकशाही कैलेंडर की पुनर्स्थापना की आवश्यकता

सिख कैलेंडर को लेकर वर्षों से गहन बहस चल रही है, विशेष रूप से पारंपरिक बिक्रम संवत से आधुनिक एवं विकसित मूल नानकशाही कैलेंडर की ओर परिवर्तन को लेकर। ऐतिहासिक रूप से सिख समुदाय बिक्रम संवत पर आधारित पंचांग का पालन करता रहा है, जो चंद्रमा की गणनाओं पर आधारित है। इसकी वजह से गुरपुरब तिथियाँ हर वर्ष बदलती रहीं, जिससे न केवल भ्रम पैदा हुआ, बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं की सटीकता भी प्रभावित हुई। इस समस्या के समाधान के लिए व्यापक शोध किया गया, जिसके परिणामस्वरूप मूल नानकशाही कैलेंडर की रचना हुई। यह पंचांग सौर गणनाओं पर आधारित है और सिख ऐतिहासिक घटनाओं के लिए स्थिर तिथियाँ प्रदान करता है।

प्रो. पाल सिंह पूरेवाल ने इस कैलेंडर के निर्माण में 40 वर्षों का समर्पण और कठिन परिश्रम किया। यह पंचांग न केवल वैज्ञानिक रूप से सटीक और ऐतिहासिक रूप से प्रमाणिक था, बल्कि सिख पंथ की स्वायत्तता और स्वतंत्र पहचान के अनुरूप भी था। सिख समुदाय ने आधिकारिक रूप से इस कैलेंडर को स्वीकार भी किया और कई वर्षों तक इसका पालन भी किया गया। किंतु दुर्भाग्यवश, अज्ञात कारणों से इसे पीछे छोड़ते हुए पुनः बिक्रम संवत को अपना लिया गया। यह निर्णय सिख धर्म की धार्मिक आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र पहचान के लिए नुकसानदायक सिद्ध हुआ। मूल नानकशाही कैलेंडर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह गुरपुरब तिथियों को स्थिर और सटीक बनाता है। उदाहरण के लिए, गुरू

गोबिंद सिंह जी का गुरपुरब हर वर्ष 5 जनवरी को मनाया जाना चाहिए, न कि हर साल बदलती तिथियों के अनुसार।

यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर पंथक संस्थाओं और जिम्मेदार सिख संगठनों को गंभीरता से विचार करना चाहिए। विश्वभर में आज भी अनेक गुरूद्वारे मूल नानकशाही कैलेंडर का अनुसरण करते हैं और उसकी प्रामाणिकता को स्वीकारते हैं। अब समय आ गया है कि सिख पंथ इस दिशा में एक निर्णायक कदम उठाए, इस कैलेंडर को पुनः स्थापित करे, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सिख इतिहास की सही और स्थिर समय–रेखा को जान सकें। साथ ही, यह कदम सिखों की धार्मिक संप्रभुता और स्वतंत्र पहचान की पुनः पुष्टि भी करेगा। यह आशा की जाती है कि पंथक संस्थाएं इस विषय पर चिंतन करेंगी और मूल नानकशाही कैलेंडर को फिर से लागू करके एक ऐतिहासिक निर्णय लेंगी।

आज के युवाओं के लिए आध्यात्मिकता को प्रासंगिक बनाना

आज के समय में गुरू नानक साहिब की आध्यात्मिकता के साथ युवाओं को जोड़ने के लिए एक नवीन और प्रासंगिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। जब हमने इस विषय पर अपनी टीम (आओ बनिए गुरसिख प्यारा) के साथ चर्चा की, तो एक रोचक तथ्य सामने आया कि Apple के CEO टिम कुक और उनकी टीम हर वर्ष नई–नई खूबियों के साथ फोन को अधिक आकर्षक और अत्य आधुनिक बनाते हैं। जिससे लोगों में उत्साह पैदा होता है, और वे बिना हिचक के नए वर्जन में निवेश करते हैं। लेकिन गुरू नानक साहिब का आध्यात्मिक संदेश ऐसा नहीं है जिसे हर साल "अपडेट" करने की जरूरत हो, यह तो एक पूर्ण, शाश्वत और सार्वभौमिक पैकेज है, जिसमें सच, ज्ञान और धर्मपरायण जीवन की संपूर्ण दिशा–निर्देश मौजूद हैं। उन्होंने ऐसा जीवन–दर्शन प्रदान किया है जो कार्यस्थल हो, पारिवारिक जीवन या सामाजिक संबंध हो; हर स्तर पर प्रासंगिक और व्यावहारिक सिद्ध होता है। उनकी शिक्षाएँ (सच, ईमानदारी, और निस्वार्थ सेवा) आध्यात्मिकता को किसी अंधविश्वास का तत्व नहीं, बल्कि जीवन जीने की सार्थक और तर्कसंगत पद्धति बनाते हैं।

इसलिए आज की युवा पीढ़ी को आध्यात्मिकता से जोड़ने के लिए हमें इसे उनके आधुनिक अनुभवों से मेल खाते हुए ढंग से प्रस्तुत करना होगा। जैसे वे तकनीकी प्रगति को महत्व देते हैं, वैसे ही उन्हें यह समझना चाहिए कि गुरू

नानक साहिब की शिक्षाएं आत्मा के लिए एक सर्वोत्तम "अपग्रेड" हैं, जो स्पष्टता, उद्देश्य और वास्तविकता से गहरा नाता प्रदान करती हैं। यदि हम आध्यात्मिकता को तार्किक, प्रासंगिक और अनुभवजन्य रूप में प्रस्तुत कर सकें, तो युवा वर्ग इसकी ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित होगा, इसे किसी रूढ़िगत परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक और संतोषप्रद जीवन–पद्धति के रूप में अपनाएगा।

श्रेष्ठ पद

हर व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है और आध्यात्मिक या सांसारिक किसी भी क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करना चाहता है। लेकिन इन पदों तक पहुँचने के लिए कुछ विशेष गुणों का होना अनिवार्य है।

पहला गुण है **समय का पालन**– जो व्यक्ति समय का आदर नहीं करता, समाज में उसकी स्वीकृति नहीं होती, और यही अनुशासनहीनता उसकी सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।

दूसरा है **निरंतरता**– कोई भी कार्य तभी पूरा होता है जब उसे लगातार अभ्यास और समर्पण से किया जाए। तीसरा है **निष्ठा**– गुरू की दृष्टि में वही व्यक्ति सच्चा सफल है जो अपने कर्तव्यों और मूल्यों के प्रति वफादार रहता है। चौथा है **परिश्रम**– बिना परिश्रम के कोई भी मील का पत्थर नहीं छू सकता, हर महान उपलब्धि के पीछे संघर्ष छिपा होता है और पाँचवाँ, सबसे महत्वपूर्ण गुण है **गुरू और गुरबाणी से जुड़ाव**– इनके बिना किसी भी उच्च स्थिति की प्राप्ति असंभव है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब हमें इन सभी गुणों को आत्मसात करना सिखाते हैं, जिससे जीवन वास्तव में सार्थक बनता है।

जागरूकता के साथ आगे बढ़ें

आज का युवा जिज्ञासु है और सकारात्मक सोच के साथ प्रश्न करता है। उसमें धर्म को समझने की गहरी रुचि है। अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम उसके प्रश्नों के उत्तर दें। समय के साथ यह भ्रांति फैल गई कि धर्म के विषय में प्रश्न नहीं करने चाहिए। परंतु गुरू नानक साहिब ने तो स्वयं प्रश्न पूछने और उत्तर खोजने की प्रेरणा दी। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के पहले ही अंक पर यह प्रश्न दर्ज है: **"किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि।।"** (कोई सच्चा कैसे बने? झूठ की दीवार कैसे टूटे?) और अगली ही पंक्ति में उत्तर दिया गया है : **"हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि।।"** (श्री.गु.ग्रं.सा.,अंग 1) इसका अभिप्राय है कि जब हम परमात्मा की मरजी में जीते हैं, तब झूठ और भ्रम की दीवारें टूट जाती हैं। ऐसे प्रश्न हमारी बुद्धि को विकसित करते हैं, विवेकशील निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करते हैं और जीवन में सही दिशा तय करने में सहायता करते हैं। अतः यह कहना कि धर्म में प्रश्न नहीं किए जाने चाहिए– एक भ्रामक धारणा है, जो समाज को अंधविश्वास और रूढ़ियों की ओर ले जाती है। आइए, हम मिलकर प्रश्न करें, उनके उत्तर खोजें, और "आगाहा कू त्राघि" (भविष्य की ओर विवेकपूर्वक अग्रसर होना) की गहराई को समझें और इसे अपने जीवन में अपनाएँ, ताकि हम स्पष्टता, समझदारी और विश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

ज्ञान को व्यवहार में उतारना आवश्यक है

सिखी एक जीवन जीने की कला से आरंभ होती है, लेकिन आज की सिख पीढ़ी इस आदर्श जीवनशैली से दूर होती प्रतीत हो रही है। इसके कई कारण हो सकते हैं, किंतु एक प्रमुख कारण यह है कि आज बहुत से लोग जो स्वयं को सिख कहते हैं, उनके जीवन में गुरबाणी के गुणों और मूल्यों की खुशबू नहीं दिखाई देती। इसके स्थान पर उनके आचरण में स्वार्थ और भौतिकता की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। गुरबाणी की ताजगी उनके दैनिक जीवन से जैसे विलीन हो गई है। हालाँकि बहुत से लोग धनवान हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं, फिर भी वे गुरबाणी की मूल शिक्षाओं, जैसे कि 'मूल मंत्र' से भी अनभिज्ञ हैं। वे स्वयं को श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का अनुयायी कहते हैं, और समाज भी उन्हें सिख के रूप में पहचानता है, परंतु उनके जीवन में गुरू नानक साहिब की शिक्षाओं का सार झलकता नहीं है।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम केवल गुरू की शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त न करें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से लागू भी करें। जब हम गुरू साहिब के अमूल्य उपदेशों को अपने व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक व्यवहार में अपनाएँगे, तभी हम वास्तव में सिखी के मूल सिद्धांतों को जी पाएँगे। सिख होना केवल एक पहचान या परंपरा का हिस्सा नहीं है– यह एक जीवंत, जागरूक और कर्मशील जीवनशैली है, जिसे गुरबाणी के अनुसार जीकर ही संपूर्णता प्राप्त की जा सकती है। ज्ञान तभी सार्थक है जब वह आचरण में उतर कर समाज को भी प्रकाश दे।

सराहना के पात्र

वर्तमान समय में वे सिख संस्थाएँ जो साहित्यिक और रचनात्मक कार्यों में सक्रिय रूप से कार्यशील हैं, सिख समाज के लिए अत्यंत मूल्यवान योगदान दे रही हैं। पारंपरिक रूप से धार्मिक गतिविधियाँ जैसे कि 'प्रवचन, कीर्तन दरबारों का आयोजन, और नगर कीर्तन' गाँवों से लेकर शहरों तक बड़ी श्रद्धा से आयोजित किए जाते रहे हैं। किन्तु आज के वैज्ञानिक और वैचारिक युग में, हमें नई पीढ़ी के साथ ऐसी भाषा और माध्यमों में संवाद करना होगा जो उनके अनुभवों और सोच से जुड़ सके। हमें उनका हाथ थामकर साहित्यिक गतिविधियों, छात्रवृत्तियों, और रोजगार के अवसरों के माध्यम से सिख इतिहास और गुरबाणी के मूल्यों से परिचित कराना होगा। ऐसा करके हम सिख युवाओं को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

'सिख होप' (मोहाली), 'सिख एजुकेशन सोसाइटी' (देहरादून), 'सिख एजुकेशन ट्रस्ट' (दिल्ली) और 'गुरूद्वारा सिंह सभा, राजौरी गार्डन' जैसी संस्थाएँ इस दिशा में अनुकरणीय कार्य कर रही हैं। ये संस्थाएँ सिख बच्चों को स्कूल, कॉलेज और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही हैं, साथ ही उन्हें रोजगार दिलवाने में भी मदद कर रही हैं। हम विनम्रतापूर्वक उन सभी सेवाभावी व्यक्तियों और संस्थाओं से निवेदन करते हैं जो पहले से इस कार्य में लगे हैं, कि वे बिना रुके अपना योगदान जारी रखें। और जो अभी तक इस दिशा में आगे नहीं आए हैं, वे यथाशीघ्र कदम उठाएँ और इस उच्चतम सेवा कार्य में अपनी भूमिका निभाएँ। आज आवश्यकता है रूढ़िवादिता से आगे बढ़कर रचनात्मक सिख नेतृत्व की, जो युवाओं के जीवन को ज्ञान, सेवा और आत्मविश्वास से भर दे। ऐसे प्रयास न केवल सराहना के योग्य हैं, बल्कि समय की माँग भी हैं।

करतारपुर साहिब की विचारधारा का प्रसार

करतारपुर साहिब कॉरिडोर का खुलना करोड़ों सिखों की वर्षों पुरानी अभिलाषा की पूर्ति है। कुछ ही दिनों में लाखों श्रद्धालु वहाँ दर्शन कर चुके हैं और असंख्य और लोग वहाँ जाने की तैयारी में हैं। यह निश्चित ही एक ऐतिहासिक और भावनात्मक उपलब्धि है। लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है: क्या जैसे हम गुरू साहिब से जुड़े पावन स्थलों के दर्शन के लिए व्याकुल हैं, वैसे ही हम वहाँ दिए गए गुरू साहिबानों के उपदेशों और विचारधारा को अपने जीवन में अपनाने के लिए भी उतने ही व्याकुल हैं? करतारपुर में गुरू नानक साहिब ने एक ऐसी समाज व्यवस्था की नींव रखी थी जो जातिविहीन, अंधविश्वास–मुक्त और परिश्रमी हो। सवाल यह है कि क्या हम उस पवित्र स्थल से केवल तस्वीरें और भावनाएँ लेकर लौटते हैं, या उन मूलभूत सिद्धांतों को भी साथ लेकर आते हैं? यात्रा तब ही पूर्ण मानी जाएगी जब करतारपुर की उस विचारधारा को हम अपने घर, कार्यालय और समाज में उतारें। गुरू नानक साहिब को सच्ची श्रद्धांजलि केवल स्थलों की यात्रा से नहीं, बल्कि उनके दिखाए मार्ग पर चलने से दी जा सकती है। यदि करतारपुर की आत्मिक प्रेरणा हमारे चरित्र और व्यवहार में नहीं झलकती, तो यह यात्रा अधूरी ही मानी जाएगी। आइए, यह संकल्प लें कि करतारपुर की ओर बढ़ाया गया हर कदम, हमें वो सच्चा जीवन जीने की शिक्षा दे जहाँ अनुभव हो, आचरण हो, और सिद्धांतों की रोशनी का प्रसार हो।

खेड़ा (सच्चा आनंद)

सांसारिक दृष्टि से सफलता के कई मापदंड माने जाते हैं, जैसे ऊँचा पद, प्रसिद्धि, धन–दौलत, महँगी गाड़ियाँ और भव्य मकान। लेकिन आध्यात्मिक स्तर पर सफलता का केवल एक ही पैमाना है: खेड़ा– अर्थात भीतरी सुख, आंतरिक शांति और आनंद की स्थिति। गुरबाणी के अनुसार, भले ही किसी के पास संसार की सारी भौतिक संपत्तियाँ हों, लेकिन यदि उसका संबंध गुरू से नहीं जुड़ा है, तो वह असफल ही माना जाएगा। इसके विपरीत, यदि कोई व्यक्ति झोपड़ी में रहता है, सादा जीवन जीता है, लेकिन परमात्मा की रजा को स्वीकार कर जीवन में संतोष और आनंद का अनुभव करता है, तो वही व्यक्ति सच्चे अर्थों में सफल कहलाता है। दुख–सुख, अच्छा–बुरा जीवन के रंग हैं। इनसे हम भाग नहीं सकते, लेकिन ये ही अनुभव हमें आत्मिक रूप से परिपक्व बनाते हैं और निडर, निरवैर होकर जीने की शिक्षा देते हैं।

गुरबाणी में कहा गया है: **जब धारै कोऊ बैरी मीतु।। तब लगु निहचलु नाही चीतु।।** (जब तक कोई व्यक्ति किसी को शत्रु या मित्र मानता है, तब तक उसका मन स्थिर नहीं रह सकता। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 278) जब हम वैर–द्वेष से ऊपर उठकर, **"एक पिता एकस के हम बारिक"** (एक ही पिता, और हम सब उसी की संतान हैं) की भावना को आत्मसात करते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में खेड़ा (आत्मिक आनंद) में लीन हो सकते हैं। आज के भौतिकतावादी युग में जहाँ संतोष के स्थान पर तुलना और भोग–विलास की दौड़ चल रही है, वहाँ यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम गुरबाणी की शिक्षाओं को अपनाएँ और रजा में रहना सीखें। सच्चा सुख वही है जो न चुराया जा सके, न बदला जा सके और जो अपने अंदर से मिले।

गुरू से जुड़ाव

आगामी समय में कीर्तन दरबारों, खालसा मार्चों, कथा–प्रवचनों, सेमिनारों और गुरमत आयोजनों की चर्चाएँ यूं ही होती रहेंगी। ये आयोजन अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं, परंतु इस बीच हम अक्सर श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की उस गहन आध्यात्मिक बुद्धि, प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति, और सृष्टिकर्ता की शाश्वत उपस्थिति को नजरअंदाज कर देते हैं, जो हर शब्द में समाई हुई है। इस आधुनिक युग में, जहाँ मनुष्य दिन–प्रतिदिन भौतिक सफलता की होड़ में लगा है, वहाँ सरलता, प्राकृतिक संतुलन, और सामाजिक करुणा दुर्लभ होते जा रहे हैं। इन परिस्थितियों में यह सोचने की आवश्यकता है कि हम गुरू ग्रंथ साहिब जी की ओर मार्गदर्शन और सहारे के लिए क्यों नहीं लौटते? आज का इंसान, जो पत्थरों से बने भव्य भवनों में रह रहा है, वह प्रकृति से अपने संबंध को तेजी से तोड़ रहा है। नतीजतन, उसमें अंधविश्वास बढ़ रहा है, लोभ और भौतिक लालसा गहराती जा रही है, और उसका धैर्य तथा संतुलन कमजोर होता जा रहा है। फिर भी, इस मायावी युग के बीच श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी आज भी एक शाश्वत ज्ञान का स्रोत है जहाँ हम न केवल सृष्टिकर्ता को, बल्कि उसकी समूची सृष्टि को एक पवित्र दृष्टि से देख सकते हैं: **सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु।।** (हे सृष्टिकर्ता! सारी प्रकृति तेरी ही रचना है, और तेरा नाम सबसे पवित्र है।) श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 464

अब समय है कि हम फिर से प्रकृति की शीतल गोद में लौटें, गुरबाणी के संदेश को अपने अंतर्मन में आत्मसात करें, और उस दिव्य कनैक्शन को अपनाएँ जो गुरू हमें सिखाते हैं। इसी मार्ग से हम न केवल अपने भीतर की अशांति और अधूरेपन को दूर कर सकते हैं, बल्कि सच्चा सुख (खेड़ा) अर्थात आंतरिक आनंद और आत्मिक संतुलन भी पुनः प्राप्त कर सकते हैं। गुरू से जुड़ना, प्रकृति से जुड़ना है और यही जुड़ाव हमें जीवन की सच्ची पूर्णता की ओर ले जाता है।

ईमानदारी से कमाओ और दूसरों से बाँटो

हर साल की तरह इस वर्ष भी हमने नये साल का स्वागत हर्षोल्लास, उत्सव और गुरूद्वारों में अरदासों के साथ किया, सबने सुख–शांति की प्रार्थना की। लेकिन एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है– जब हम सबकी भलाई के लिए दुआ करते हैं, तो क्या हम वास्तव में उस भलाई के लिए कर्म भी करते हैं? केवल "सरबत के भले" की अरदास करना ही पर्याप्त नहीं है। सच्चा परिवर्तन तभी आएगा जब हम गुरू के दिखाए मार्ग पर चलें और उनके उपदेशों को अपने जीवन में उतारें। नया साल केवल बाहरी उत्सव का अवसर नहीं होना चाहिए, बल्कि आंतरिक परिवर्तन का भी समय होना चाहिए। प्रगति और समृद्धि प्राप्त करने के लिए हमें एक रचनात्मक और दूरदर्शी सोच अपनानी होगी। गुरू नानक साहिब जी फरमाते हैं: **"घालि खाइ किछु हथहु देइ।। नानक राहु पछाणहि सेइ।।"** (श्री.गु.ग्रं.सा., अंग 1245) नानक कहते हैं, जो व्यक्ति मेहनत की कमाई करता है और उसमें से कुछ दूसरों के साथ बाँटता है वही सच्चे मार्ग को पहचानता है। इन शबदों के माध्यम से गुरू साहिब हमें परिश्रम करने और मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देते हैं, और आलस्य तथा निकम्मेपन से सावधान करते हैं।

सच्ची समझ से ही आती है बुद्धिमत्ता

अक्सर कहा जाता है कि हमारी किस्मत ऊपरवाला लिखता है, लेकिन गुरबाणी इस धारणा को एक अलग दृष्टिकोण से देखती है: **फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख।।** – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 1378 (फरीद, यदि तेरे पास सच्ची समझ है, तो अपने कर्मों की किताब में बुरे कर्म मत लिख।) इस पंक्ति से स्पष्ट होता है कि अपनी किस्मत के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। हम आज जो अच्छे या बुरे कर्म करते हैं, वही हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं। "सही ज्ञान के अधीन श्रम" की धारणा भी इसी सोच से मेल खाती है, जब ज्ञान सही स्रोत और सही ढंग से प्राप्त किया जाए, तभी जीवन सार्थक और पूर्ण बनता है। गुरबाणी हमें भ्रम और आलस्य से ऊपर उठने की प्रेरणा देती है: **मेरा मनु आलसीआ उघलाना।।** – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 697 (मेरा मन पहले सुस्त और निष्क्रिय था, पर अब जागृत हो गया है।) इसका भाव यह है कि आलस्य को त्यागकर मेहनत और प्रयास की ओर अग्रसर होना चाहिए। गलत कर्म केवल दुखों की ओर ले जाते हैं, जबकि आज किए गए शुभ कार्य भविष्य में खुशहाली और आनंद सुनिश्चित करते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम कल का इंतजार न करें और अभी से ही धर्म और सदाचार के मार्ग पर चलने का पक्का संकल्प लें।

सफलता की आकांक्षा

ईश्वर ने हर मनुष्य को एक अनमोल उपहार दिया है, जो है बुद्धि और विवेक। गुरबाणी में उल्लेख है: **एका सुरति जेते है जीअ।। सुरति विहूणा कोइ न कीअ।।** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 24) इसका अर्थ है कि सृष्टि के सभी जीवों में वह दिव्य चेतना और समझ विद्यमान है, जो उन्हें ईश्वर से प्राप्त होती है। ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिसे ईश्वर ने बुद्धिहीन बनाया हो। हर व्यक्ति अपने जीवन का मार्ग अपनी समझ और विवेक के अनुसार तय करता है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम अपनी बुद्धि और इस अमूल्य मानव जीवन का उपयोग किस दिशा में और किस प्रकार करते हैं। यदि हम अपनी असफलताओं के लिए ईश्वर को दोष देने की बजाय, जीवन का सदुपयोग करें, तो सफलता एक ऐसी कृपा है जो स्वयं वाहेगुरू की ओर से प्राप्त होती है। जब हम सही दिशा में प्रयास करते हैं, तो सफलता हमारे कदम चूमती है, और यह भी उसी ईश्वर की देन होती है।

अहंकार से मुक्ति

गुरबाणी केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन ही नहीं देती, बल्कि यह हमारे जीवन के अन्य पहलुओं, जैसे संबंधों और सामाजिक व्यवहार में भी मार्गदर्शन करती है। यह हमें अहंकार से बचकर विनम्रता अपनाने की सीख देती है। सिख गुरूओं ने अपने जीवन में विनम्रता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया, लेकिन आज का मनुष्य धीरे–धीरे अहंकार और आत्म–गौरव के जाल में फँसता जा रहा है। वह धैर्य और परमात्मा की रजा को नकारता है। जीवन में मिली अनेक उपलब्धियाँ अकसर घमंड को जन्म देती हैं, जो हमें अकाल पुरख (परमात्मा) से दूर कर देती हैं और इस सांसारिक जीवन में दुखों का कारण बनती हैं। गुरबाणी इस सच्चाई को स्पष्ट करती है: **हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि।।** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 466) इसका आशय है कि अहंकार एक दीर्घकालिक मानसिक रोग है, परंतु उसका इलाज भी आत्मचिंतन और आत्मविवेक से संभव है। इसके लिए आवश्यक है कि हम निरंतर अपने विचारों का निरीक्षण करें, नकारात्मक सोच से दूर रहें, और विनम्रता को अपने स्वभाव में उतारें। समय के साथ जब हम इन सिद्धांतों को अपनाते हैं, तो अहंकार का उपचार प्रभावी होने लगता है, और हम एक सार्थक व सफल जीवन के पथ पर अग्रसर हो जाते हैं।

जीवन जीने की कला

मनुष्य 'शरीर' और 'मन' दोनों से मिलकर पूर्ण होता है। जैसे शरीर की अपनी आवश्यकताएँ होती हैं, वैसे ही मन की भी अपनी जरूरतें होती हैं। इस संसार में रहते हुए कोई भी व्यक्ति परिश्रम और प्रयास के माध्यम से वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है जिसकी वह आकांक्षा करता है, क्योंकि आज का भौतिकतावादी युग सभी प्रकार के संसाधनों से भरपूर है। लेकिन क्या मानसिक शांति भी इसी प्रकार खरीदी जा सकती है? इसका उत्तर है 'नहीं'। क्योंकि मन की प्रसन्नता के लिए भिन्न प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार, जीवन को सही ढंग से समझना आवश्यक है: **गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ।।** – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 31 (जो व्यक्ति गुरू की इच्छा के अनुसार चलता है, वह जीवन की उच्चतम स्थिति को प्राप्त करता है।) अर्थात यही मार्ग आत्मिक आनंद की ओर ले जाता है। ऐसा आनंद जंगलों में जाकर संसार से विरक्त होकर साधना करने से प्राप्त नहीं होता। सच्चा सुख तो उसे प्राप्त होता है जो जीवन की कठिनाइयों के बीच भी सहजता और संतुलन के साथ जीना सीख लेता है।

विरोधों पर विजय

विचारों और मतों में भिन्नता होना स्वाभाविक है। यहाँ तक कि एक परिवार के सदस्यों में भी अक्सर मतभेद होते हैं, फिर भी लोग साथ रहते हैं। मनुष्य की एक मूलभूत दुर्बलता यह है कि वह अपेक्षा करता है कि अन्य लोग भी उसी तरह सोचें जैसे वह सोचता है, और उसी से सहमत हों। जो व्यक्ति हर हाल में अपने ही विचार को सही ठहराने पर तुला रहता है, वह नए दृष्टिकोणों के लिए अपने द्वार बंद कर देता है। एक और बड़ी कमजोरी यह सोच है कि "जो मैं समझता हूँ, वही अंतिम सत्य है।" इस संदर्भ में भक्त कबीर जी की अमूल्य बाणी हमें आत्मचिंतन की राह दिखाती है: **बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि।।** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 727) इसका तात्पर्य यह है कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करता है, तो वह जीवन की बाधाओं को पार कर सकता है और आगे बढ़ सकता है। दुर्भाग्यवश, आज बहुत से सिख आंतरिक टकरावों में उलझे हुए हैं, वे एक–दूसरे को गलत सिद्ध करने में लगे रहते हैं, जबकि उन्हें इस आध्यात्मिक सच्चाई को अपनाना चाहिए: **प्रभ के सेवक दूख न झूरन।।** – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 395 (जो प्रभु की सेवा में लगते हैं, वे व्यर्थ के दुखों में नहीं पड़ते।) अर्थात यदि हम ईर्ष्या और निरर्थक वाद–विवाद को छोड़ दें, तो हम अपने भीतर की रोशनी को सच्चे आध्यात्मिक ज्ञान से प्रकाशित कर सकते हैं।

सभी शक्तियाँ एक ही के अधीन

गुरू नानक साहिब जी के समय में समाज छल–कपट, शोषण और बेईमानी से ग्रस्त था। चारों ओर भ्रष्टाचार फैला हुआ था। जिन शासकों का कर्तव्य था मानवता की रक्षा करना, वे ही अत्याचारी बन बैठे थे। धार्मिक आडंबरों ने आत्म–सम्मान और नैतिकता को नष्ट कर दिया था, और अंधविश्वास ने जनमानस को भ्रमित कर दिया था। ऐसे अंधकारमय समय में गुरू नानक साहिब जी ने एक न्यायसंगत समाज की नींव रखी: **नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै।।** – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 966

यह समाज आत्म–स्वराज, मानव अधिकारों और नैतिक साहस पर आधारित था। इसमें निर्भयता, एकता, धैर्य, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान जैसे वे मूल्य समाहित थे जो एक धर्मनिष्ठ और सामंजस्यपूर्ण समाज के लिए अनिवार्य हैं। सब कुछ परमात्मा की इच्छा से ही होता है, जैसा कि गुरू अरजन साहिब ने कहा: **जा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग।।** (परमात्मा के हाथ में ही सम्पूर्ण शक्ति है, वही सभी कार्यों को करने में सक्षम है। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 255) फिर भी, यह भी सत्य है कि परमात्मा की दिव्य बुद्धि हर जीव के भीतर विद्यमान है। यदि हम इस संसार को एक बेहतर स्थान बनाना चाहते हैं, तो हमें गुरू की बाणी पर चलकर स्वयं जिम्मेदारी उठानी होगी: **आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ।।** हर व्यक्ति को अपने कर्मों की जिम्मेदारी स्वयं उठानी चाहिए और अपने जीवन को खुद सँवारना चाहिए। (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 474) यही विचार हमें सिखाते हैं कि प्रभु की कृपा के साथ–साथ, कर्म और जिम्मेदारी से ही एक उज्ज्वल और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना संभव है।

आराधना (सेवा) करो तो केवल एक की

धार्मिक स्थलों पर लंबी कतारें इस बात की गवाही देती हैं कि आज भी श्रद्धालुओं की कोई कमी नहीं है। विशेष रूप से ऐतिहासिक गुरूद्वारों में गुरपुरब जैसे अवसरों पर घंटों लाइन में लगकर लोग श्री गुरू ग्रंथ साहिब के दर्शन व मत्था टेकने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। कई बार भावनाओं में बहकर श्रद्धालु यह भी नहीं देख पाते कि वह गुरू ग्रंथ साहिब को मत्था टेक रहे हैं या उस स्थान को, जहाँ ग्रन्थी या पाठी सिंह बैठे होते हैं। कुछ तो यहाँ तक मान लेते हैं कि जहां ग्रंथी के चरण पड़े हों, वहां सिर झुकाना सौभाग्य है। यह विचारणीय है– क्या केवल गुरूद्वारों में जाने से मोक्ष प्राप्त हो सकता है? क्या मात्र मत्था टेकने या दर्शन करने से हम बुराइयों से मुक्त हो सकते हैं? गुरू साहिब हमें स्पष्ट करते हैं: **सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु।। डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु।।** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 594) सारी दुनिया गुरू को देखती है, पर जब तक 'शबद' पर मनन नहीं होता, मुक्ति नहीं मिलती।

अतः गुरू ग्रंथ साहिब जी के सामने केवल झुकना ही पर्याप्त नहीं है। जब तक हम उनके उपदेशों को जीवन में नहीं अपनाते, शबद का चिंतन और आचरण नहीं करते, तब तक सच्ची मुक्ति संभव नहीं। गुरू साहिब आगे फरमाते हैं: **टहल करहु तउ एक की जा ते ब्रिथा न कोइ।।** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 255) यदि भक्ति करनी है तो केवल एक की करो, ताकि तुम्हारा समर्पण व्यर्थ न जाए। इसलिए जरूरी है कि हम केवल प्रतीकों की पूजा तक सीमित न रहें, बल्कि गुरू के शबद को जीवन में उतारें और सच्चे अर्थों में केवल परमात्मा की भक्ति करें, वही भक्ति सार्थक है।

परमात्मा सर्वव्यापक है

गुरबाणी सृजनहार (कादर) और सृष्टि (कुदरत) के संबंध को सुंदरता से स्पष्ट करती है। यद्यपि ये दो भिन्न शब्द हैं, परंतु इनकी आत्मा एक ही है: **आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि।। आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि।।** (परमात्मा प्रत्येक हृदय में वास करता है और साथ ही वह बाहर भी व्यापक है। वह ही छिपा हुआ है और वही प्रकट भी है। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 555) अर्थात गुरू साहिब हमें प्रेरित करते हैं कि हम सृष्टि, जो स्वयं परमात्मा की अभिव्यक्ति है– का सम्मान करें और उसकी रक्षा करें: **बलिहारी कुदरति वसिआ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ।।** (हे प्रभु! मैं तेरी सृष्टि पर बलिहार जाता हूँ, इसका कोई अंत समझ नहीं सकता। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 469) फिर भी, हम अक्सर अपनी भक्ति की भावना में भटककर वही सृष्टि को नुकसान पहुंचा देते हैं। गुरूद्वारों को सजाने के लिए कीमती फूलों को तोड़ना, प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय करना, और दिखावे के लिए खर्च करना, ये सब गुरबाणी की मूल शिक्षाओं के विरुद्ध हैं। गुरू साहिब स्पष्ट निर्देश देते हैं कि समाज की भलाई ही सच्चा सेवा–मार्ग है: "गरीब का मुँह गुरू की गोलक।" इसलिए यदि हम सच्ची आत्मिक और सामूहिक उन्नति चाहते हैं, तो हमें सृष्टि की रक्षा करते हुए विवेक और जिम्मेदारी से कार्य करना होगा। प्रकृति के साथ संतुलन और समाज के उत्थान की भावना ही सच्चे अर्थों में गुरू की सेवा है।

गहरा संबंध

अक्सर लोग कहते हैं कि आजकल रिश्तों में पहले जैसी गहराई और अपनापन नहीं रहा। समय के साथ जीवन की गति इतनी तेज हो गई है कि लोगों के पास बैठकर अपने सुख–दुख साझा करने का समय भी नहीं बचा। इस भावनात्मक दूरी के कारण मानव समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे तनावपूर्ण माहौल में हमें मधुमक्खियों से सीख लेनी चाहिए, जिन्हें मधुर शहद बनाने के लिए एकजुट होकर काम करना पड़ता है। इसी तरह चाहे वह खून के रिश्ते हों या गहरी दोस्तियाँ, वे तभी टिक सकते हैं जब हम आपसी सामंजस्य बनाए रखें। आखिरकार, एक अकेला पेड़ भी तेज आँधियों का सामना नहीं कर सकता। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि राष्ट्रीय एकता भी तभी संभव है जब हम गुरू साहिब और श्री गुरू ग्रंथ साहिब से प्रेरणा लें। हर सिख को सिखी सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीना चाहिए, क्योंकि सिद्धांतों के बिना एकता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एकता, सहयोग और सेवा की भावना ही हमें व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर स्थायी संबंधों की ओर ले जाती है।

चढ़दी कला (उच्चतम अवस्था) की ओर अग्रसर

इक्कीसवीं सदी विज्ञान का युग है। यह युग जहाँ एक ओर मानवता को अभूतपूर्व भौतिक प्रगति की ओर ले गया है, वहीं दूसरी ओर आत्मिक पतन का भी कारण बन गया है। आज, भले ही साधनों और तकनीकी उपलब्धियों की कोई कमी नहीं, परंतु अनेक लोग आत्मिक रूप से बिखरे हुए और कमजोर महसूस कर रहे हैं। मन के संदेहों से मुक्त होकर चढ़दी कला (उच्चतम अवस्था) की स्थिति को बनाए रखने के लिए गुरू साहिब हमें उपदेश देते हैं: **जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरू कहीऐ।। मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ।।** (जिस गुरू की संगति से मन में आनंद उत्पन्न हो, वही सच्चा गुरू कहलाता है। मन का भ्रम मिटते ही परमात्मा की उच्चतम अवस्था प्राप्त होती है। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 168) अर्थात सच्चा आनंद केवल तब प्राप्त होता है जब हम परमात्मा से जुड़ते हैं, तब द्वैत और अस्थिरता समाप्त हो जाते हैं। गुरू नानक साहिब ने इस आत्मिक जागृति का बीज बोया, और आज सिख धर्म मानवता को इसी राह पर अग्रसर कर रहा है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब केवल आध्यात्मिक कल्याण की ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू की समझ भी प्रदान करते हैं। आज के चुनौतीपूर्ण समय में हम अपने लक्ष्य तक तभी पहुँच सकते हैं यदि हम गुरू द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलें। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम अंधविश्वास, बाह्य आडंबरों और चमत्कारों से ऊपर उठें और एक विवेकपूर्ण व जागरूक दृष्टिकोण अपनाएँ। केवल तभी सिखी वास्तविक रूप से पनपेगी और 'चढ़दी कला' अर्थात् सकारात्मकता, उत्साह और आत्मिक ऊँचाई की दिशा में आगे बढ़ेगी।

समझे बिना नाम जपना

हमारे दर्शक अक्सर यह प्रश्न करते हैं कि "नाम सिमरन" वास्तव में क्या है? अपनी सीमित समझ के आधार पर, मैं इस विषय पर कुछ विचार साझा करना चाहता हूँ। "नाम" शब्द का तात्पर्य है– ईश्वर संबंधी दिव्य ज्ञान और "सिमरन" का अर्थ है– उस ज्ञान को समझना, आत्मसात करना और जीवन में उतारना। श्री गुरू ग्रंथ साहिब के अनुसार, जो व्यक्ति इस दिव्य ज्ञान को समझ लेता है, वह धैर्य, संतोष और स्थिरता से भरपूर जीवन जी सकता है। यह मार्ग किसी बाहरी दिखावे, कर्मकांड या चमत्कारी भ्रमों में पड़ने का नहीं है। गुरू अर्जन साहिब गुरबाणी में फरमाते हैं: **पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे।। पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अह्मबुधि बाधे।।** (कोई चाहे वेदों का अध्ययन करे, ग्रंथ पढ़े, या साँप की तरह जमीन पर लोट–लोटकर तप करे, लेकिन जब तक पाँच विकारों– काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से नाता नहीं छूटता, तब तक वह केवल अपनी अहंकारयुक्त बुद्धि को ही बढ़ाता है।– श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 641) इसका सार यह है कि मात्र पाठ, जप, या बाहरी साधना से आत्मिक उन्नति नहीं होती, बल्कि कभी–कभी यह अहंकार को और भी अधिक बढ़ा देती है। इसलिए "नाम सिमरन" का अर्थ केवल शबदों को यंत्रवत दोहराना नहीं है। इसका सच्चा अर्थ है– गुरबाणी से ज्ञान प्राप्त करना, उसे अपने जीवन में उतारना, और परमात्मा की रजा में रहना। जब हम ऐसा करते हैं, तभी हमारा मन सच्ची शांति, स्थिरता और ईश्वरीय आनंद का अनुभव करता है।

तुलना से कृतज्ञता की ओर

आज के आधुनिक जीवन में मानसिक समस्याएँ जैसे अवसाद, चिंता और अकेलापन दिन–ब–दिन बढ़ रही हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि लोग भौतिक दौड़ में उलझकर अपने आप को दूसरों से कमतर महसूस करते हैं। वे अपने संसाधनों, पद और जीवनशैली की तुलना दूसरों से करते हैं, और जब वे अपने आप को कम पाते हैं, तो मानसिक तनाव में आ जाते हैं। इस मनोवृत्ति से बाहर निकलने का मार्ग केवल गुरबाणी की दृष्टि से ही संभव है। गुरबाणी तुलना करने से मना नहीं करती, बल्कि हमें यह सिखाती है कि तुलना कैसे करनी चाहिए। गुरू साहिब हमें यह उपदेश देते हैं कि हमें उन लोगों को देखना चाहिए जिनके पास हमसे कम है, जिन्हें दो वक्त की रोटी के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। जब हम यह समझते हैं कि हमें जो कुछ भी मिला है वह किसी न किसी के लिए एक सपना है, तो हमारे भीतर अपने आप ही एक गहरी कृतज्ञता की भावना जन्म लेती है। कृतज्ञता सिख दर्शन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मूल्य है। गुरू ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं के प्रकाश में हमें व्यर्थ की तुलना छोड़कर कृतज्ञ हृदय के साथ जीना सीखना चाहिए। आइए, हम इस विचार को आत्मसात करें कि सच्चा सुख, दूसरों से आगे निकलने में नहीं, बल्कि अपने भीतर बसे प्रभु के समक्ष शुक्राना करने में है।

रूढ़ियों की निरर्थकता

भारत एक ऐसा देश है जहाँ धर्म, भाषा और परंपराओं की विविधता देखने को मिलती है। समय के साथ–साथ अनेक धर्मों के पुरोहितों ने धर्म पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और लोगों को यह विश्वास दिला दिया कि उनका कल्याण पूजा–पाठ, कर्मकांडों और चढ़ावे पर निर्भर करता है। उन्होंने भय का वातावरण बनाया और यह सोच विकसित कर दी कि यदि इन धार्मिक अनुष्ठानों का पालन न किया गया तो ईश्वर अप्रसन्न हो जाएगा। इस अज्ञानता के कारण लोगों ने यह मान लिया कि शारीरिक कष्ट सहना, व्रत–उपवास करना, या कठिन तप करना ही ईश्वर को प्रसन्न करने का मार्ग है। परंतु गुरू साहिब स्पष्ट करते हैं: **मनहठि किनै न पाइओ सभ थके करम कमाइ।। मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ।।** (हठपूर्वक किसी ने भी प्रभु को नहीं पाया। जो भी कर्मकांडों में लगे, वे सभी थक गए। हठ करके विविध भेष धारण करने वाले भ्रम में भटकते रहे और द्वैत में दुख भोगते रहे। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 593)

दुर्भाग्यवश, आज सिख समाज में भी कई निरर्थक रस्में और आडंबर घर करने लगे हैं। यह सब आध्यात्मिक और बौद्धिक उन्नति की बजाय मानसिक जड़ता की ओर ले जा रहा है। आज के विज्ञान और विवेक के युग में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि शारीरिक कष्ट या ढोंग–प्रदर्शन आत्मिक आनंद का मार्ग नहीं हैं। सच्चा सुख और संतुलन गुरबाणी के बताए मूल्यों– परिश्रम, धैर्य और संतोष से ही प्राप्त होता है। गुरबाणी हमें एक सहज, सरल और संतुष्ट जीवन जीने

की प्रेरणा देती है। इसी दिव्य ज्ञान के माध्यम से हम न केवल धार्मिक परिपक्वता, बल्कि सामाजिक समझ और सद्भाव भी प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए, बाहरी कर्मकांडों से ऊपर उठकर हमें गुरबाणी की समझ और उस पर अमल को ही अपना मार्गदर्शन बनाना चाहिए।

शरीर और मन

हम अपने जन्मदिनों को बड़े उल्लास से परिवार और मित्रों के साथ मनाते हैं, साथ मिलकर अपनी खुशियाँ साझा करते हैं। लेकिन ऐसी खुशियाँ तभी सार्थक होती हैं जब हमारा शरीर और मन दोनों स्वस्थ हों। जैसे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम, चलना–फिरना और संतुलित आहार जरूरी होता है, वैसे ही मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए भी शबद गुरू– श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से जुड़ना अनिवार्य है। गुरबाणी को समझना और उसे अपने जीवन में लागू करना, मन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना शरीर के लिए व्यायाम। जब हम गुरू की बाणी को अपने विचारों, भावनाओं और कर्मों में उतारते हैं, तभी हमारा आंतरिक विकास संभव होता है। आइए, हम सभी यह संकल्प करें कि हम अपने शरीर के साथ–साथ आत्मा की देखभाल भी करेंगे और यह देखभाल गुरबाणी की आत्मिक समझ और उस पर अमल से ही संभव है। यही मार्ग है एक संतुलित, सुखद और सार्थक जीवन का।

सिख शताब्दियों का उत्सव

हम वास्तव में सौभाग्यशाली हैं कि हम गुरू साहिबान की शताब्दियों का उत्सव मना पा रहे हैं। ये आयोजन सिख समुदाय को सिख इतिहास और गुरबाणी से गहरा जोड़ते हैं। शताब्दी समारोह यह स्मरण कराते हैं कि सिख पंथ, जो कुछ हद तक अपने मार्ग से भटक गया है, उसे श्री गुरू ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक जड़ों की ओर लौटना चाहिए। 1966 से, सिख समुदाय ने कई शताब्दियों को मनाया है, जिनका मुख्य उद्देश्य गुरू साहिब का संदेश संपूर्ण मानवता तक पहुँचाना रहा है। आज का युग विचारों का युग है, जहाँ सिख अध्ययन से जुड़ी पुस्तकें, शोध प्रकाशन और विश्वविद्यालयों में स्थापित चेयर्स कहीं अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रही हैं। ये प्रयास सिखों की वैश्विक पहचान को मजबूती प्रदान करते हैं। आज, पहले से कहीं अधिक, यह आवश्यक है कि सिख संस्थान और व्यक्ति एकजुट हों, ताकि आने वाली शताब्दियाँ सच्चे अर्थों में मनाई जा सकें और नई पीढ़ी को गुरू और सिखी से गहरा जुड़ाव मिल सके।

बाल जीवन, महान बलिदान

सिख इतिहास महान बलिदानों से भरा पड़ा है। गुरूओं और उनके सिखों ने मानवता की भलाई के लिए चरण–दर–चरण अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। शहादत के इतिहास में 20 से 26 दिसंबर (6 से 13 पोह) के दिन वे दिन हैं जब गुरू गोबिंद सिंह जी के चारों साहिबजादों, माता गुजरी जी, पंज प्यारे में से तीन प्यारे सिखों और कई अन्य सिखों ने शहादत प्राप्त की। सिख समुदाय में इस अवधि को शहीदी हफ्ता कहा जाता है। यह शहीदी हफ्ता हमें इस बात की गहराई से याद दिलाता है कि आज के समय में हमें गुरू साहिब के दृढ़, निष्ठावान सिखों से प्रेरणा लेनी चाहिए। जब हम गुरू साहिब पर विश्वास रखते हैं और खुद को परमात्मा के चरणों में समर्पित करते हैं, तो हमें हर कण में परमात्मा की मौजूदगी का अनुभव होता है: **सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु।। जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु।।** (अर्थात विश्वास से सजदा करो, मन की इच्छा परमात्मा को बना लो। जिधर भी देखो, उधर ही वही मौजूद है। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 84)

परंतु आज के युग में तर्क, विवेक और समझ हमारे निर्णयों का मार्गदर्शन करते हैं। ऐसे समय में, हमें गुरबाणी की बुद्धि पर अटूट विश्वास रखते हुए, श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी और इतिहास से प्रेरणा लेकर मानव प्रगति के सिद्धांतों को अपनाना चाहिए और इन्हें समस्त मानवता तक पहुँचाना चाहिए। यही साहिबजादों और सिख वीरों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

समर्थ मनुष्य

मनुष्य, परमात्मा की सबसे बुद्धिमान और शक्तिशाली रचना है। संपूर्ण पृथ्वी पर कोई और प्राणी मानव की क्षमताओं की बराबरी नहीं कर सकता। जो श्रेष्ठता मानव जाति ने प्राप्त की है, वह किसी अन्य जीव के लिए असंभव है। इसलिए जिन्हें परमात्मा ने निम्न योनियों के चक्र से ऊपर उठाकर मानव जीवन प्रदान किया है, उन्हें कभी खुद को असहाय या कमजोर नहीं समझना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने स्रोत, अपने उद्देश्य और अपने सृष्टिकर्ता को पहचानें। गुरू साहिब हमें आदेश देते हैं: **मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।। मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु।।** (हे मन, तू परम ज्योति का स्वरूप है, अपने मूल को पहचान। हरि तेरे साथ है, गुरमत द्वारा उसकी कृपा का आनंद ले। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 441)

यदि हम इस सच्चाई को वास्तव में समझ लें, तो यह अनुभव होगा कि मानव जीवन प्राप्त करने के बाद हमारे कर्म भी मानवता के अनुरूप होने चाहिए, न कि निम्नतर जीवों की प्रवृत्तियों के अनुसार। जब हम ऐसा करने लगेंगे, तब समूची मानवता का उत्थान शीघ्र ही संभव होगा। हम इस संसार को स्वर्ग में तभी परिवर्तित कर सकते हैं जब हम अपने मूल से जुड़ें और निष्काम सेवा के माध्यम से संपूर्ण मानव समाज के कल्याण के लिए कार्य करें।

गुरू से मुँह मोड़ने का परिणाम केवल भटकाव है

हम सभी 21वीं सदी में जी रहे हैं, एक ऐसा युग जो तर्क, विचार, विज्ञान और विवेक पर आधारित है। सभी धर्मों में से सिख धर्म ऐसा धर्म है जो इन सिद्धांतों को पूरी तरह से अपनाता है, क्योंकि इसकी नींव ही तर्क और विचारशीलता पर रखी गई है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में जीवन के हर पक्ष की विवेकपूर्ण और तर्कसंगत व्याख्या की गई है। लेकिन चिंता की बात यह है कि सिख धर्म के अधीन कुछ धूर्त व्यक्ति और स्वयंभू संत (बाबा) एक ऐसा नया मार्ग बना चुके हैं जो सिखों को उनके मूल विश्वास से भटका रहा है। यह मार्ग अंधविश्वासों, ढकोसलों और मनुष्यों को गुरू मानने की अंध भक्ति से भरा हुआ है। इन कर्मकांडों में फँस जाना, गुरू साहिब से मुँह मोड़ने के समान है, क्योंकि सिख गुरूओं ने अपने जीवन की यात्राओं, शिक्षाओं और बलिदानों के माध्यम से लोगों को ऐसी ही अज्ञानता से मुक्त करने का कार्य किया था। फिर भी, आज के समय में कई सिख सच्चे मार्ग से भटक चुके हैं। आइए, हम अपनी भूलों के लिए क्षमा माँगें, गुरू के मार्ग पर लौटें, और गुरू साहिब की सच्ची कृपा प्राप्त करें।

बिबेकी (विवेकी) सिख

इतिहास साक्षी है कि सिखों ने न कभी गरीबी के कारण और न ही किसी अत्याचार के डर से अपने धर्म को छोड़ा है। इस अडिगता का मूल कारण उन पुरातन सिखों का बिबेकी होना है। बिबेकी से अर्थात् है वे सिख जो गुरू की सोच और विवेक के साथ गहराई से जुड़े रहे। सिख का गुरू विवेकी है, इसलिए सिख को भी विवेकशील बनना चाहिए अन्यथा वह वास्तव में सिख कहलाने योग्य नहीं रह जाता। आज सिख समुदाय में एक चिंताजनक प्रवृत्ति यह है कि कई सिख श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी से बाहर जाकर सिख धर्म को ढूँढते हैं। वे अक्सर ऐसे रास्तों पर चल पड़ते हैं जहाँ पहले उन्हें तर्क और विवेक को त्यागकर अंधश्रद्धा और अंधविश्वास की ओर धकेला जाता है। जबकि गुरू साहिब हमें आदेश देते हैं: **बूझै देखै करै बिबेक।।** (जो समझता है, देखता है और विवेक से कार्य करता है। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 278)

इस मूल सिद्धांत को आज कई लोगों ने त्याग दिया है। जब हम गुरू से दूर हो जाते हैं, तो हम ठोकरों का शिकार बन जाते हैं और अपने मार्ग से भटक जाते हैं। हमें प्रकृति का एक महत्वपूर्ण नियम नहीं भूलना चाहिए– यदि हमारी रोग–प्रतिरोधक क्षमता मजबूत है, तो कोई भी बीमारी हमें हानि नहीं पहुँचा सकती। उसी प्रकार, यदि किसी सिख की गुरबाणी की समझ गहरी है, तो कोई भी भ्रम उसे बहका नहीं सकता। ऐसा सिख, मृत्यु के सामने भी अपने विश्वास से नहीं डगमगाएगा। अभी भी समय है आइए, हम फिर से गुरू से जुड़ें और सांसारिक विकर्षणों से स्वयं को मुक्त करें।

गहन समझ

हमारे दर्शक अक्सर एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाते हैं: जब सिख इतिहास की एक ही घटना को अलग–अलग प्रचारक अपने–अपने स्थानिक गुरूद्वारों में अलग–अलग रूपों में सुनाते हैं, तो सही इतिहास को समझना कठिन हो जाता है। ऐसे में क्या किया जाए?

इस संदर्भ में, हम अपने दर्शकों से विनम्र निवेदन करते हैं कि हमें अपने इतिहास को गुरबाणी की रोशनी में पढ़ना और समझना चाहिए। केवल विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण करके ही हम सही निर्णय ले सकते हैं। गुरबाणी हमें एक दृष्टिकोण, तर्क और वैज्ञानिक सोच प्रदान करती है, जो इतिहास की समझ में हमारा मार्गदर्शन करती है। इतिहास के कई पहलुओं को इस प्रकार लिखा गया है जो गुरबाणी के अनुरूप नहीं हैं। अंधविश्वास, चमत्कारों की कहानियाँ और मनगढ़ंत घटनाएँ– इन सबको पंथ की भलाई के लिए पूरी तरह अस्वीकार करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, हम प्रचारकों से अनुरोध करते हैं कि वे किसी भी जानकारी को गुरू साहिबान से जोड़ने से पहले गहराई से जांचें और विवेक से काम लें। किसी भी ऐतिहासिक तथ्य को संगत के सामने रखने से पहले, उसे श्री गुरू ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं की कसौटी पर परखना अत्यंत आवश्यक है।

अंधविश्वासों से मुक्ति

गुरू नानक साहिब ने मानवता को जागरूक करने का एक अनोखा और अद्वितीय तरीका अपनाया। अपनी उदासियों (धार्मिक यात्राओं) के दौरान उन्होंने विभिन्न धर्मों और जातियों के विद्वानों और साधुओं से गहन विचार–विमर्श किए। उदाहरण के लिए, एक ओर उन्होंने एक विशेष धर्म से जुड़ी रस्म 'जनेऊ' को पहनने से इंकार किया, वहीं दूसरी ओर उन्होंने यह भी बताया कि सच्चा 'जनेऊ' कैसा होना चाहिए। उन्होंने कहा: **दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु।। एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु।।** (ऐसा जनेऊ जिसकी कपास दया हो, जिसका सूत संतोष का हो, जिसमें जत की गाँठें हों, और जिसका बॅट (वॅट) ऊँचा आचरण हो, यह सच्चा जनेऊ अगर तुम्हारे पास है, तो मुझे पहनाओ। –श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 471)

इसी प्रकार, हरिद्वार में उन्होंने उन लोगों की चक्षु खोलने का प्रयास किया जो अपने पूर्वजों को पानी चढ़ाने की अंध परंपरा में विश्वास करते थे। उन्होंने पानी को विपरीत दिशा में फेंककर यह दिखाया कि यदि तुम्हारा जल पितरों तक पहुँच सकता है, तो मेरा जल भी पंजाब में उनके खेतों तक पहुँच जाना चाहिए। ऐसे उदाहरणों के माध्यम से गुरू साहिब ने अनेकों अंधविश्वासों को तोड़ा और यह स्पष्ट किया कि मृतकों के लिए किए गए कर्मकांड, पाठ और दान उन्हें कोई लाभ नहीं पहुँचाते। बल्कि, व्यक्ति के इस जीवन के नेक कर्म ही उसके भविष्य का निर्धारण करते हैं। अब हमें आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है कि क्या सिखों को पुरोहिती व्यवस्था द्वारा अंधविश्वास के गहरे गर्त में धकेला जा रहा है? अब समय आ गया है कि हम जागें, श्री गुरू ग्रंथ साहिब से मार्गदर्शन लें और एक अर्थपूर्ण जीवन जिएँ।

संयुक्त राष्ट्र और गुरु तेग बहादुर जी

गुरू नानक साहिब के बाद, गुरू तेग बहादुर जी ने भारतभर में यात्राएँ कीं ताकि पहले गुरूओं द्वारा स्थापित संगतों को पुनः सक्रिय किया जा सके। उन्होंने लोगों को अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध निर्भय होकर खड़े होने के लिए प्रेरित किया। उस समय जब राजनीतिक शक्तियों द्वारा जबरदस्ती धर्म परिवर्तन किया जा रहा था, तब गुरू तेग बहादुर जी ने लोगों को साहस के साथ उसका विरोध करने की प्रेरणा दी। अंततः, उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दे दिया और मुगल साम्राज्य के अत्याचारों को रोकने में सफलता प्राप्त की। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि गुरू तेग बहादुर जी के मानवाधिकारों के लिए दिए गए शहीदी बलिदान को संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) द्वारा 273 वर्ष बाद, 1948 के मानवाधिकार घोषणापत्र में मान्यता दी गई। इसके अतिरिक्त, गुरू साहिब ने धुबरी (असम) में दो युद्धरत शासकों के बीच मध्यस्थता कर शांति स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे रक्तपात टल गया। यह घटना मानव इतिहास में दर्ज सबसे प्रारंभिक शांति स्थापना प्रयासों में से एक मानी जाती है। इसके विपरीत, प्रथम विश्व युद्ध (1914) के दौरान केवल पाँच दिन के लिए युद्धविराम हुआ था और एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसी संस्थाएँ तो बहुत बाद में अस्तित्व में आईं। जब हम गुरू साहिब की शहादत को स्मरण करते हैं, तब यह हमारा कर्तव्य बनता है कि हम इन ऐतिहासिक तथ्यों को विश्व के समक्ष रखें और गुरू साहिब की सार्वभौमिक शिक्षाओं को दुनिया भर में फैलाएँ।

परंपराओं का अनुसरण

सिख धर्म विश्व का ऐसा प्रमुख धर्म है जिसके मूल सिद्धांत मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के सभी 30 अनुच्छेदों से पूर्णतः मेल खाते हैं। गुरू नानक साहिब जी ने धर्मशालाएँ स्थापित कीं और मानव इतिहास में पहली बार उत्तराधिकारी के रूप में वंश परंपरा को त्याग कर गुणों के आधार पर भाई लहणा जी (गुरू अंगद साहिब जी) का चयन किया। यह एक ऐतिहासिक उदाहरण बना, जिसने बाद में लंगर प्रणाली, पंच प्यारों की व्यवस्था और अन्य प्रशासनिक परंपराओं के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों को जन्म दिया। मानव चेतना की जो यात्रा गुरू नानक साहिब जी ने आरंभ की थी, वह तब अपने चरम पर पहुँची जब गुरू गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की और गुरू ग्रंथ साहिब जी को शाश्वत गुरू घोषित करके यह परंपरा सदा के लिए सुदृढ़ कर दी। गुरू ग्रंथ साहिब जी को समस्त मानवता के मार्गदर्शन हेतु सार्वभौमिक संविधान के रूप में स्थापित करना विश्व के लिए एक क्रांतिकारी कदम था।

महाराजा रणजीत सिंह का सिख साम्राज्य भी इन्हीं लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित था। आज जब विश्व के 170 से अधिक देश लोकतांत्रिक प्रणाली को अपना चुके हैं, यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की दिव्य रोशनी से प्रेरणा लें। ऐसा करने से लोकतंत्र अपनी सच्ची नींव पर और अधिक मजबूत हो सकेगा, जिससे न्यायसंगत शासन, संगठित प्रगति और सभी के लिए समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

उपदेशों के अनुसार जीवन जीने की आवश्यकता

यदि हम "जीवन" शब्द का गहराई से विश्लेषण करें, तो यह अस्तित्व की एक दिव्य लय (Rhythm) का प्रतीक है। इस संदर्भ में गुरू साहिब का संदेश हैः **हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ||** (श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 522) अर्थात् जब हमें सतगुरू (सच्चे गुरू) से सच्चे जीवन जीने की समझ मिल जाती है, तो हम इसी संसार में रहते हुए भी मोक्ष का मार्ग पा सकते हैं। हँसना, खेलना, वस्त्र पहनना या भोजन करना– इन सब पर कोई रोक नहीं है। बल्कि, इन क्रियाओं में संलग्न रहते हुए भी हम मुक्त रह सकते हैं। लेकिन इसका सार इस बात में है कि हम इन शारीरिक आवश्यकताओं को गुरू के हुक्म के अनुसार पूरा करें, ऐसा न हो कि ये आवश्यकताएँ हमें मोह, विकार या बंधनों में जकड़ लें। इसलिए आवश्यक है कि हम हर पल को गुरू की हिदायतों के अनुसार जीने का प्रयास करें, एक धर्ममय जीवन अपनाएँ, अपने जीवन स्तर को लगातार ऊँचा करें, और सांसारिक माया, इच्छाओं व भ्रमों से स्वयं को दूर रखें।

वर्तमान से भविष्य की ओर

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी को स्मरण करते हुए हमें उनके राष्ट्र–निर्माण के दृष्टिकोण, रणनीतिक युद्ध कौशल, सिख पंथ के प्रति लिए गए दूरदर्शी निर्णयों, खालसा की रचना के समय सिखों के चयन, श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी को गुरगद्दी देने जैसे महान कार्यों पर मनन करना चाहिए। उनके ये सभी नवोन्मेषी और नेतृत्वकारी गुण आज की 21वीं सदी में सिख समुदाय के वर्तमान और भविष्य को संवारने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। गुरू साहिब का जीवन अनेक संघर्षों से भरा हुआ था। उन्होंने भंगाणी, नांदेड़, रोपड़, आनंदपुर, निर्मोहगढ़, चमकौर, सरसा, मुक्तसर और अन्य स्थलों पर कई युद्ध लड़े। निर्वासन की स्थिति में रहते हुए भी उन्होंने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। गुरू साहिब हमें सिखाते हैं कि जीवन में अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की परिस्थितियाँ आती हैं, लेकिन सच्चे ज्ञान से इन्हें आसानी से पार किया जा सकता है। हमें गुरू नानक साहिब द्वारा दिखाए गए सच्चाई के मार्ग पर चलना चाहिए। गुरू गोबिंद सिंह जी की शिक्षाएँ सिख समुदाय के लिए एक प्रकाशस्तंभ हैं, जो धर्म, साहस और तरक्की की राह दिखाती हैं।

बुद्धिमानों की संगति में मतभेदों की समाप्ति

मानव जीवन में वैचारिक मतभेद अक्सर टकराव का कारण बनते हैं। ये संघर्ष केवल बाहरी नहीं होते, बल्कि समय के साथ व्यक्ति के अंदर भी जड़ पकड़ लेते हैं। इन टकरावों का मुख्य कारण होता है 'अहम' और 'दूसरों के प्रति सम्मान की कमी'। गुरबाणी हमें मार्गदर्शन देती है: **ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू।।** (संघर्ष और मन–मुटाव, साधु यानी बुद्धिमान संगति में समाप्त हो जाते हैं। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 260) यहाँ "साधु" का तात्पर्य बुद्धि और विवेक से है। जब कोई व्यक्ति बुद्धिमता और समझ के साथ मानव जीवन के सच्चे मूल्यों को जान लेता है, तब वह दिव्य गुणों को अपनाने लगता है और अपनी कमजोरियों को त्याग देता है। जब हम "सर्वजन हिताय" (सर्बत दा भला) की भावना को अपनाते हैं, तो हमारे भीतर और बाहर के सभी भेदभाव और मतभेद स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाते हैं। गुरू साहिब ने विशेष रूप से मानवता को जाति, पंथ, नस्ल और रंग के भेदों से मुक्त होने का संदेश दिया। उन्होंने समानता और एकता पर बल दिया। इसीलिए गुरू साहिब ने उद्घोष किया: **एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।।** (एक ही पिता है, और हम सब उनकी संतान हैं। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 611) जब हम सबका परमपिता एक है और हम सब एक ही मार्ग पर चल रहे हैं, तो फिर हमारे बीच कोई भेद क्यों हो? आइए, हम केवल गुरबाणी का पाठ न करें, बल्कि उसके अर्थों को गहराई से समझें और अपने जीवन में उतारें। ऐसा करके हम ईर्ष्या, संघर्ष और विभाजन से मुक्त एक शांतिपूर्ण जीवन बना सकते हैं।

व्यक्तित्व विकास

आज के समय में हर व्यक्ति को एक अच्छे रोजगार के लिए अपने व्यक्तित्व विकास (Personality Development) पर काम करना आवश्यक हो गया है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए अनेक निजी संस्थाएँ स्थापित की गई हैं, जो व्यक्तियों को संवारने और उन्हें नौकरी के योग्य बनाने का प्रशिक्षण देती हैं। लेकिन एक गुरसिख के लिए इससे कहीं अधिक लाभकारी है कि वह इस ज्ञान को अपने समृद्ध विरसे और परंपरा से प्राप्त करे। गुरबाणी में वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति को हर पहलू में परिपूर्ण और उत्तम बना सकती है। आत्म–विकास की दिशा में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम है– 'आत्म–चेतना' (Self & Awareness)। गुरू अमरदास साहिब इस ओर संकेत करते हैं: **मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु।।** (हे मन, तू स्वयं परम ज्योति का स्वरूप है, अपने मूल को पहचान। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 441) इसी तरह, भगत कबीर जी भी कहते हैं: **बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि।।** (हे मनुष्य, प्रतिदिन अपने हृदय की खोज कर, व्यर्थ की चिंता में मत उलझ। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 727)

यदि कोई व्यक्ति गुरबाणी में वर्णित दिव्य गुणों से जुड़ जाता है, तो उसका व्यक्तित्व स्वतः ही निखरने लगता है। ये शिक्षाएँ स्पष्ट प्रमाण हैं कि आत्म–विकास के लिए गुरबाणी से बेहतर कोई मार्गदर्शक नहीं हो सकता, न कोई मनुष्य और न ही कोई संस्था इसकी बुद्धिमत्ता और प्रभावशीलता की बराबरी कर सकती है।

एक आनंदमय और संतोषपूर्ण जीवन के लिए गुरबाणी की गूढ़ शिक्षाएँ

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी हमें एक आनंदित और संतोषपूर्ण जीवन जीने के लिए गहरी आत्मिक बुद्धि प्रदान करते हैं। गुरबाणी इस बात पर बल देती है कि आंतरिक नकारात्मकताओं को जीत कर ही हम दिव्य चेतना के साथ जुड़ सकते हैं। ईर्ष्या, जैसा कि गुरबाणी में वर्णित है, असुरक्षा और दूसरों से नकारात्मक तुलना से उत्पन्न होती है। यह मनुष्य को घमंड, झगड़े और भौतिकता के मोह में फँसा कर इस अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ कर देती है। इसी प्रकार, लालच और जलन को भी हतोत्साहित किया गया है। बाबा फरीद जी फरमाते हैं: **फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ।।** (हे फरीद, दूसरों की मिठास या समृद्धि को देखकर लालच मत कर। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 1379) इसका आशय यह है कि दूसरों की संपत्ति को देखकर ललचाना आत्मिक पतन की ओर ले जाता है।

भले ही सद्‌गुणी व्यक्तियों से प्रेरणा लेना लाभकारी है, लेकिन अधार्मिक मार्गों से धन या प्रतिष्ठा अर्जित करने का प्रयास आत्मा को गिरावट की ओर ले जाता है। चिंता, जो मनुष्य की शांति को अंदर से जला देती है, गुरबाणी में उसे आग के समान बताया गया है। ऐसी चिंता, जो अनियंत्रित या अप्रत्याशित घटनाओं को लेकर होती है, व्यर्थ है– क्योंकि यह संसार अस्थायी और परिवर्तनशील है। गुरबाणी सिखाती है कि हमारी आशा परमात्मा में स्थिर होनी चाहिए, न कि क्षणिक सांसारिक साधनों में। सच्ची भावनात्मक स्थिरता केवल शबद–गुरू और ईश्वर में अटल विश्वास द्वारा प्राप्त होती

है। इसके अलावा, अंदरूनी आनंद का एक रहस्य यह भी है कि हम शिकायतों से बचें। जीवन की कठिनाइयों के लिए दूसरों को दोष देने या रोने के बजाय, हमें रजा (ईश्वरीय इच्छा) को सच्च मानकर स्वीकार करना चाहिए। गुरबाणी हमें यही भावना सिखाती है। इन शिक्षाओं के माध्यम से गुरबाणी हमें मानसिक रूपांतरण की आध्यात्मिक रूपरेखा प्रदान करने के साथ–साथ ईर्ष्या को संतोष में, जलन को प्रेरणा में, चिंता को विश्वास में, आशा को श्रद्धा में, और शिकायत को कृतज्ञता में बदलने का मार्ग भी दिखाती है। यही सच्चा आंतरिक आनंद पाने का उपाय है।

दुखों से मुक्ति

बसंत ऋतु के आगमन के साथ ही प्रकृति खिल उठती है, हरियाली चारों ओर फैल जाती है। गुरू साहिब प्रकृति में बसने वाले परमात्मा का वर्णन करते हुए कहते हैं: **बलिहारी कुदरति वसिआ।। तेरा अंतु न जाई लखिआ।।** (मैं उस परमात्मा पर बलिहार जाता हूँ जो सृष्टि में वास करता है; उसका अंत कोई नहीं जान सकता। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 469) इसी तरह राग बसंत में, गुरू साहिब और भक्तों ने ऐसे शबद रचे हैं जो मानवता को अहंकार छोड़कर आनंद और प्रसन्नता अपनाने की प्रेरणा देते हैं: **देखु फूल फूल फूले।। अहं तिआगि तिआगे।।** (देखो, फूल कैसे खिले हुए हैं। अहंकार को त्यागो और आनंदित हो जाओ। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 1185)

यहाँ समझने योग्य बात यह है कि बसंत ऋतु साल में केवल कुछ समय के लिए आती है, लेकिन गुरबाणी हमें यह सिखाती है कि हम कैसे हर समय एक आध्यात्मिक बसंत की स्थिति में रह सकते हैं, जहाँ आंतरिक आनंद, प्रसन्नता और आत्मिक तृप्ति बनी रहे। जब कोई व्यक्ति दिव्य गुणों को अपने जीवन में उतार लेता है, तो वह दुखों से मुक्त हो सकता है और हर परिस्थिति में आनंद और संतोष की स्थिति में जी सकता है। इसलिए, हर व्यक्ति को गुरबाणी की समझ को अपने अंदर समाहित करने की आवश्यकता है ताकि वह संसारिक जिम्मेदारियाँ निभाते हुए भी अपने जीवन में बसंत (आंतरिक वसंत) का अनुभव कर सके। यही है सच्ची खुशी और आत्मिक उन्नति का मार्ग।

अनुसंधान की आवश्यकता

सिख इतिहास में कई ऐसी कहानियाँ और कथाएँ शामिल हो चुकी हैं जो या तो मनगढ़ंत हैं या उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है और वे गुरबाणी की शिक्षाओं के अनुकूल भी नहीं होतीं। जब इस विषय में इतिहासकारों और विद्वानों से चर्चा की जाती है, तो वे अक्सर यह कहकर टाल देते हैं कि ये बातें प्राचीन ग्रंथों या मौखिक परंपराओं के माध्यम से चली आ रही हैं– परंतु यहाँ केवल परंपरा का हवाला देना पर्याप्त नहीं है। इसलिए, समकालीन लेखकों, शोधकर्ताओं, विद्वानों और प्रचारकों से विनम्र निवेदन है कि गुरू साहिब से संबंधित किसी भी कथा या घटना की प्रमाणिकता को श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की कसौटी पर परखना आवश्यक है, क्योंकि वही सिखों के लिए अंतिम और सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है। ऐसी कोई भी कहानी या वृतांत जो गुरू ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं के विपरीत हो, उसे प्रचार या विमर्श का हिस्सा नहीं बनाना चाहिए।

आधुनिक सिख इतिहासकारों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे सत्य और कल्पना में स्पष्ट भेद करें, ताकि सिखी का संदेश उसके असली, शुद्ध स्वरूप में प्रचारित और प्रसारित हो सके। यह कार्य इस कारण से और भी महत्वपूर्ण है कि आगामी पीढ़ियाँ उसी ज्ञान और प्रचार के प्रभाव में पले–बढ़ेंगी। यदि हम उन्हें झूठी या भ्रामक कहानियाँ परोसते हैं, तो हो सकता है कि वे सिख धर्म से विमुख हो जाएँ, न कि उससे जुड़ें। अतः यह अत्यावश्यक है कि विद्वानों और प्रचारकों को गहन शोध के लिए प्रोत्साहित किया जाए ताकि जनसामान्य तक केवल वही कथाएँ पहुँचें जो ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित हों और गुरबाणी की शिक्षाओं से मेल खाती हों। यही मार्ग सिख धर्म की सच्ची सेवा और आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करने का माध्यम बन सकता है।

हमारी जिम्मेदारी

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी में छह गुरू साहिबान, पंद्रह भक्तों, ग्यारह भट्टों और तीन गुरसिखों की पावन बाणी संकलित है, जो छह शताब्दियों की ज्ञान–संपदा को मानवता के मार्गदर्शन और कल्याण के लिए संजोकर रखती है। गुरू गोबिंद सिंह जी ने इस दिव्य ग्रंथ को गुरूपद प्रदान करते हुए आदेश दिया: **"गुरू मानियो ग्रंथ"**– अर्थात गुरू के रूप में गुरू ग्रंथ साहिब को ही स्वीकारो।

हर सिख का कर्तव्य है कि वह न केवल श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं का अध्ययन और मनन करे, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारे और सभी धर्मों के लोगों तक इसका संदेश सच्चाई के साथ पहुँचाए। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गुरबाणी का ज्ञान बिना किसी मनगढ़ंत कहानी या प्रकृति–विरुद्ध चमत्कारी किस्सों के, पूर्ण सत्यता के साथ प्रचारित किया जाए। आज के आधुनिक युग में लोग आत्मिक मार्गदर्शन की खोज में हैं और यह मार्गदर्शन श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की पावन शिक्षाओं में पूर्ण रूप से उपलब्ध है। हर सिख को अपने धर्म का सच्चा प्रतिनिधि (Ambassador) बनकर यह प्रयास करना चाहिए कि गुरू ग्रंथ साहिब की सार्वभौमिक बुद्धि 21वीं सदी में मानवता के मार्ग को प्रकाशित करे। अपने जीवन से गुरबाणी को जीना, और दूसरों को भी उस रौशनी की ओर प्रेरित करना यही हमारी सच्ची सेवा है।

ईश्वरीय लीला को पहचानना

जो कुछ भी हम आज देखते, समझते और अनुभव करते हैं– वह सब परमात्मा की असीम और अनोखी लीला का ही भाग है। यह संसार उसी की दिव्य रचना है, जहाँ वह स्वयं वास करता है। फिर भी यह संसार एक स्वप्न के समान है जिसमें यथार्थ और माया का मिश्रण है। यह संसार भ्रमों और मोह–छलों से भरा हुआ है, एक तपते रेगिस्तान की रेत जैसा, जहाँ कभी–कभी पानी का मृगतृष्णा (मृगजल) वास्तविक लगता है, पर अंततः वह झूठा ही सिद्ध होता है। अब असली प्रश्न यह है– हम इस माया से भरे संसार में सत्य और असत्य में भेद कैसे करें? हम भ्रम से ऊपर उठकर गुरू तक कैसे पहुँचें? इसका उत्तर गुरू अर्जन साहिब हमें देते हैं: **नानक से अखड़ीआं बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी।।** (धन्य हैं वे आँखें जो हर जगह अपने प्यारे (परमात्मा) का दर्शन करती हैं। – श्री गुरू ग्रंथ साहिब, अंग 577)

जिस प्रकार असली और नकली हीरे में अंतर करने के लिए सजग दृष्टि की आवश्यकता होती है, उसी तरह इस माया रुपी संसार में जीने के लिए गुरबाणी की दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है जो श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी से प्राप्त होती है। गुरबाणी का ज्ञान एक अलौकिक चश्मा है, जो हमें सांसारिक विकर्षणों से ऊपर उठाकर परमात्मा से जोड़ता है। अतः हमें श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं को दृढ़ता से थामना चाहिए, इस विशेष दृष्टि को विकसित करना चाहिए, और संसार से असत्य व भ्रष्ट आचरण को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ईश्वरीय खेल को पहचानना और गुरू की दृष्टि से संसार को देखना ही सच्ची समझ है।

परिचयः

डा. हरजिंदर सिंह (लेखक) : सिख धर्मशास्त्र, संस्कृति और भाषा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित लेखक, इन्होंने सिख सिद्धांतों और विरासत को विभिन्न मंचों के माध्यम से बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सामुदायिक उत्थान और शिक्षा के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के साथ, इन्होंने एक अग्रणी टीवी चैनल पर एक अनूठा क्विज़ शो शुरू किया, जो सिख उपलब्धियों को उजागर करने और सिख मूल्यों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है। यह कार्यक्रम, सिख मीडिया के इतिहास में अपनी तरह का एकमात्र शो, मीडिया उपस्थिति और व्यापक सराहना प्राप्त कर चुका है, क्योंकि इसने दर्शकों को सिख पहचान से जोड़ने का एक नया व प्रेरणादायक मार्ग प्रस्तुत किया। इनके प्रमुख साहित्यिक कार्यों में "21वीं सदी: नवी सोच", "आगाहा कू त्राघि","ज्ञान दा सागर" और *Progressive Thoughts* शामिल हैं, जिन्होंने समकालीन सिख चिंतन और साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया हैं।

डा. दविंदर सिंह (सह लेखक) : एक प्रतिष्ठित विद्वान, अनुवादक और लेखक हैं। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से पंजाबी में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है और वर्तमान में श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, करोल बाग (दिल्ली) में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। डॉ. सिंह ने आठ वर्षों तक भाई वीर सिंह साहित्य सदन में शोधकर्ता के रूप में कार्य करते हुए सिख दर्शन, इतिहास, समाज और साहित्य से जुड़े विषयों पर गहन कार्य किया है। वे *Canada Sikh Times* समाचार पत्र के मानद संपादक भी हैं। आप एक कुशल अनुवादक, संपादक और विचारशील लेखक होने के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्र में भी महारत रखते हैं। एक प्रसिद्ध पुस्तक डिज़ाइनर और रचनात्मक पुस्तक कवर कलाकार के रूप में आपकी पहचान साहित्यिक जगत में विशेष रूप से मानी जाती है। आपकी लेखनी में विचारों की स्पष्टता, भाषा की सादगी और चिंतन की गहराई का सुंदर संगम देखने को मिलता है। अध्यात्म, समाजशास्त्र, नारी समानता और सिख सिद्धांतों जैसे विषयों पर आपके लेख नई पीढ़ी को न केवल ज्ञान देते हैं, बल्कि प्रेरित भी करते हैं। साहित्य, विचार और समाज सेवा के क्षेत्र में आपका योगदान उल्लेखनीय और प्रेरणास्पद है।

संतुलित सोच एक गहन और विचारोत्तेजक पुस्तक है जो पाठकों को बुद्धिमत्ता, आत्म-विकास और आध्यात्मिक जागृति को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। यह पुस्तक संतुलित विचारधारा के सार को उजागर करती है और व्यक्तियों को अपने मूल्यों और परंपराओं में दृढ़ रहते हुए साहस के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। गहन चिंतन और दार्शनिक विचारों के माध्यम से, संतुलित सोच उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ बन जाती है जो व्यक्तिगत और बौद्धिक विकास की खोज में हैं। यह संतुलन बनाने के प्रति एक जुनून को प्रज्वलित करती है और पाठकों को ज्ञान, स्पष्टता और उच्च चेतना के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

Supported by

Gurmat Quiz Show on Chardikla Time TV
AAO BANIYE GURSIKH PYARA
aaobaniyegursikhpyara@gmail.com

Facebook Youtube Website

9 789365 542011